Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

ण य संखयमाहु जीवियं,
तह वि य बालजणो पगब्भई।

टूटे हुए जीवन-सूत्र को जोड़ा नहीं जा सकता। फिर भी अज्ञ मनुष्य हिंसा आदि में धृष्ट होता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 37 • 20 - 26 जून, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 18-06-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

-: आचार्यश्री महाप्रज्ञ :-

103वाँ जन्म दिवस (प्रज्ञा दिवस)

आषाढ़ कृष्णा - 13 (26 जून, 2022)

अध्यात्म सुमेरु, दशमाचारज हैं! प्रज्ञा पुरुष महाप्रज्ञ तारणहार,
आत्मगवेषक, आराधक, उद्बोधक बालू नंदन थे गजब के साहित्यकार।

दार्शनिक व्यक्तित्व तुम्हारा गुरुवर, थे करुणा के तुम मंदार,
सरस्वती के वरद पुत्र तुम, किया ध्यान-योग का पुनरुद्धार।

तुलसी गुरु के संरक्षण में, खूब भरा भिक्षु गन का भंडार,
जन्म जयंती के अवसर पर प्रेक्षा प्रणेता स्वीकारो वंदन शत-शत बार।

-- : श्रद्धाप्रणत : --

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

अहिंसा, संयम और तप रूपी धर्म है सर्वोत्कृष्ट मंगल : आचार्यश्री महाश्रमण

जैन हाईस्कूल, बीकानेर, १२ जून, २०२२

मानवता के महामसीहा, करुणासागर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आज भीनासर से विहार कर साध्वी सेवा केंद्र शांति निकेतन पधारे। वृद्ध माइत साध्वियों को दर्शन दिराकर एवं उनकी सारणा-वारणा कर धन्य-धन्य कर दिया। गुरु माता-पिता के समान होते हैं। लगभग आठ वर्ष से साधिक अंतराल के पश्चात परम पावन का यहाँ पधारना हुआ है। सभी सेवाग्राही एवं सेवादायी साध्वियों के मन में उल्लास था, वे गुरु दर्शन कर धन्य-धन्य स्वयं को महसूस कर रही थी।

वहाँ से विहार कर गुरुदेव जैन हाईस्कूल पधारे। मार्ग में गंगाशहर में विराजित संतों ने पूज्यप्रवर के बाहर ही दर्शन किए। विशाल श्रावक-श्राविका समाज को मंगल पाथेय प्रदान करते हुए वात्सल्यमूर्ति ने फरमाया कि हमारी दुनिया में मंगलकामना की जाती है। आदमी स्वयं का भी मंगल, हित, कल्याण चाहता है।

मंगल के लिए शब्दिक कामना भी की जाती है और कुछ प्रयत्न भी किया जाता है कि मंगल हो। यात्रा या विशेष अवसर पर शुभ मुहूर्त भी देखने वाले प्रयास करते हैं। कुछ पदार्थों का सेवन भी मुहूर्त या मंगल के संदर्भ में गुड़, जलेबी, दही आदि-आदि का करने वाले कर सकते हैं।

धर्मशास्त्र में भी मंगल की बात आई है। सबसे बड़ा मंगल धर्म होता है। धर्म हमारे साथ है, तो मानना चाहिए कि मंगल हमारे साथ है। दुनिया में अनेक धर्म-संप्रदाय है। कौन सा धर्म मंगल है। शास्त्रकार ने यहाँ किसी संप्रदाय का नाम नहीं लिया। श्लोक के एक चरण में अति संक्षेप में धर्म को बता दिया। बताया–अहिंसा, संयम और तप धर्म है।

कोई आदमी अहिंसा की आराधना करता है, तो वह मंगल प्राप्त कर सकता है। संयम की साधना करने वाला मंगलमय बन सकता है। जो तप तपता है, वह मंगलयुक्त बन सकता है। कोई प्राणी हंतव्य नहीं है। प्राणियों की हिंसा मत करो। सब जीव जीना चाहते हैं, कोई मरना नहीं चाहता। व्यवहार भी अहिंसापूर्ण हो। जो व्यवहार तुम दूसरों से नहीं चाहते, वह व्यवहार तुम भी दूसरों के साथ मत करो।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

✦ *एक चक्षु है और उसे धर्म कहा गया है। अविवेकपूर्वक किया गया कार्य अनर्थकारी हो सकता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

थोड़े लाभ के लिए ज्यादा हानि स्वीकार कर लेना मूढ़ता की बात : आचार्यश्री महाश्रमण

कोचरों का चौक, बीकानेर, १३ जून, २०२२

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी लाल कोठी-बीकानेर में विराज रहे हैं। आज का प्रवचन कोचरों के मोहल्ले (चौक) में हुआ, जहाँ प्रायः सभी परिवार मंदिरमार्गी हैं। आज चतुर्दशी भी थी। जिज्ञासा समाधान का कार्यक्रम भी रखा गया।

मंगल देशना प्रदान करते हुए जिनवाणी के व्याख्याता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि एक चिंतन का महत्त्वपूर्ण विषय है कि कौन-सा कार्य करना चाहिए, जिसको करने से नुकसान कुछ नहीं है, लाभ ही होता है। दूसरा वैसा कार्य भी हो सकता है, जिसको करने में लाभ नहीं, नुकसान ही है। तीसरा कार्य ऐसा भी हो सकता है, थोड़ा लाभ है, ज्यादा नुकसान है। चौथा कार्य ऐसा भी हो सकता है कि थोड़ा नुकसान है, लाभ ज्यादा है।

शास्त्रकार ने कहा है कि थोड़े लाभ के लिए ज्यादा नुकसान नहीं उठाना चाहिए। थोड़े लाभ के लिए ज्यादा हानि स्वीकार कर लेना मूढ़ता या नासमझी की बात हो सकती है।

आज चतुर्दशी है, इस दिन मर्यादा के बारे में हमारे यहाँ चर्चा की जाती है। प्रेरणा भी इस अवसर पर दी जा सकती है। कुछ कभी-कभी संवाद भी हो सकता है, कभी प्रश्नोत्तर भी हो सकते हैं। हम चारित्रात्माओं के लिए भी चिंतन का विषय है कि थोड़े के लिए बहुत को नहीं गँवाना चाहिए।

साधु के पास एक बड़ी संपदा शीलव्रत-संयम होती है। साधु के पाँच

महाव्रत हैं। इन पाँच महाव्रतों को पाँच हीरे कहा जा सकता है। ये इतने अमूल्यवान हीरे हैं जिसके सम्मुख संसार के गृहस्थों के हीरे बहुत ही अल्प महत्त्व वाले हैं। गृहस्थों के हीरे तो ज्यादा से ज्यादा इस जीवन काल तक के हैं। साधु के पास जो हीरे हैं, वो आगे के लिए भी कल्याणकारी सिद्ध हो सकते हैं। ये पाँच हीरे साधु की बड़ी संपदा है। इनकी सुरक्षा करना साधु का कर्तव्य होता है।

गृहस्थ भी थोड़े के लिए बहुत खोने की सोच सकते हैं। पैसे के लिए ईमानदारी को गँवा देना किसी संदर्भ में थोड़े के लिए बहुत को खोना हो सकता है। गार्हस्थ्य में भी जितना हो सके संयम-साधना का प्रयास करते रहना चाहिए। जीवन में अहिंसा, ईमानदारी, संयम गृहस्थ के हो यह प्रयास रहना चाहिए।

थोड़ा कष्ट आ जाए तो भी सच्चाई को नहीं खोना चाहिए। यह एक दृष्टांत से समझाया कि जहाँ सच्चाई है, वहाँ लक्ष्मी का वास होता है। धन के रूप में लक्ष्मी रहे न रहे, पर लक्ष्मी का एक रूप है, आभा वो जीवन में रह सकती है।

हम साधुओं ने सत्य महाव्रत को स्वीकार किया है, उसे पाँव पकड़कर भी रखना चाहिए। जाने नहीं देना चाहिए। संयम रत्न के लिए हाथ जोड़ी भी कर लेंगे पर उसे जाने नहीं देंगे और चीजें जाएँ तो जाएँ पर संयम रत्न हमारे पास रहे। गृहस्थ के लिए भी संयम की शक्ति बड़ी चीज होती है।

जैन शासन में अहिंसा-संयम का बड़ा सूक्ष्म विवेचन मिलता है। जैन शासन में तपस्याएँ भी होती हैं, ये भी एक आत्मा की संपदा होती है। ये आध्यात्मिक संपदाएँ हैं। ये बड़ी चीज है, यह भी एक दृष्टांत से समझाया कि भौतिक रत्न से भी बड़ा संयम-अध्यात्म का रत्न है।

पाँच-समिति व तीन गुप्ति की अच्छी आराधना हो। ये आठ प्रवचन माताएँ पाँच महाव्रतों की सुरक्षा करने वाली सिद्ध हो सकती हैं। हम अपने संयम रूपी रत्न सुरक्षा करते रहें, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन किया। मुनिश्री दिनेश कुमार जी एवं मुनि ध्रुव कुमार जी से लेख पत्र का वाचन करवाया। मुनि दिनेश कुमार जी स्वामी को ३१ कल्याणक एवं मुनि ध्रुव कुमार जी को ११ कल्याणक बख्शीष करवाए। साधु-साध्वियों ने समुह में लेख पत्र का वाचन किया। जेठ शुक्ला चतुर्दशी को शासनमाता को भी पूज्यप्रवर ने याद किया। तीन माह पहले उनका महाप्रयाण हो गया था। आज उनकी मासिक तिथि है।

आज ही के दिन एक माह पहले साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी का मनोनयन भी पूज्यप्रवर द्वारा किया गया था। जिज्ञासा-समाधान का कार्यक्रम रखा गया।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में जिस व्यक्ति ने प्रवेश पा लिया उसका बचपन, युवावस्था व वृद्धावस्था प्रफुल्लता से, आनंद से जीवन व्यतीत होता है। हमें ऐसे आचार्य प्राप्त हुए हैं, जो हमारी चिंता व देख-रेख करते हैं।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि लोटे की तरह यदि आत्मा को रोज माँजा जाए तो उस पर कर्म रज जमा नहीं हो पाती है। स्वाध्याय-ध्यान से आत्मा को शुद्ध बना सकते हैं। हमारा कल्याण पूज्यप्रवर के प्रवचनों से हो सकता है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में तेयुप अध्यक्ष भरत नौलखा, संजय बैद, प्रवीण सेठिया, जितेंद्र कोचर, सुषमा व टीम, सुरपत बोथरा, विजयचंद बोथरा, महिला मंडल व सुरेश बैद सभा मंत्री ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि साधना द्वारा क्लेश से मुक्त हुआ जा सकता है।

जीवन शांतिमय बनाने के लिए पाएँ संतों से सद्ज्ञान : आचार्यश्री महाश्रमण

देशनोक, ६ मई, २०२२

शक्ति स्वरूपा करणी माता का स्थान। दूर-दूर से लोग आस्था से यहाँ आते हैं। यह मंदिर काबा (चूहों) के लिए प्रसिद्ध है।

वात्सल्य मूर्ति ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के जीवन में आचार का भी महत्त्व है और ज्ञान का भी महत्त्व है। सम्यक् ज्ञान प्राप्त हो जाता है, तो सम्यक् आचार का मार्ग भी प्रशस्त हो सकता है। ज्ञान गुरु से, त्यागी संतों से, शिक्षकों से मिल सकता है। अनेक प्रकार के गुरु हो सकते हैं।

अध्यात्म विद्या का भी अपना ज्ञान है। लौकिक विद्या का अपना ज्ञान है। किताबों से भी कई तरह के ज्ञान प्राप्त किए जा सकते हैं। ज्ञान प्राप्ति के लिए कुछ परिश्रम अपेक्षित हो सकता है। स्वाध्याय से ज्ञान प्राप्त हो सकता है। अच्छा ज्ञान मिलने से व्यक्ति एकाग्रचित्त बन सकता है। एकाग्रचित हो जाने पर आदमी अच्छे मार्ग में स्थित हो सकता है। स्वयं सन्मार्ग में स्थित होकर दूसरों को भी मार्ग में लाने का प्रयास कर सकता है।

सत्संगति से भी ज्ञान मिल सकता है, दिशा और दशा बदल सकती है। यह एक दृष्टांत से समझाया कि अभय होना भी एक अच्छी स्थिति हो सकती है। आदमी परिवार के लिए पाप करता है, पर जब पाप का फल मिलता है, तब कोई साथ नहीं देता, स्वयं को ही फल भोगना पड़ता है। साधु की संगत से अंतर की आँखें खुल सकती हैं, व्यक्ति सन्मार्ग पर चल सकता है।

ज्ञान सही होता है, तो जीवन और आचार का मार्ग भी प्रशस्त बन सकता है। भारत में संत भी हैं, तो देवी-देवताओं के आस्था के स्थान भी अनेक हैं। आज हम करणी माता के क्षेत्र देशनोक में आए हैं। हमारी साध्वी हुलासांजी भी लंबे काल तक यहाँ रही हैं। पर हमारे आने से पहले आगे चली गई।

संतों के तो दर्शन भी अपने आपमें पवित्र होते हैं। भारतीय साहित्य में संत की महिमा बताई गई है। संतों से प्राप्त सद्ज्ञान जीवन के व्यवहार में अवतरित हो जाएँ तो आदमी का जीवन शांतिमय बन सकता है। यह जीवन ही नहीं, आगे का समय भी प्रशस्त रह सकता है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

सम्यक् पुरुषार्थ करने से होता है सफलता का वरण : आचार्यश्री महाश्रमण

रासीसर, ८ मई, २०२२

शासन गौरव मुनि ताराचंदजी स्वामी के संसारपक्षीय पैतृक गाँव रासीसर में तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी का पदार्पण हुआ। शासन गौरव मुनि ताराचंद जी का तो सन् २०१६ में देवलोकगमन हो गया था। वे महान साधक, ध्यान योगी और तपोयोगी थे।

परमपूज्य ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हम मनुष्य जीवन जी रहे हैं। हम मनुष्यों के लिए चिंतन का विषय यह बनता है कि यहाँ तो मनुष्य है, आगे क्या बनेंगे? देव, नरक और तिर्यंच योनियाँ भी हैं। एक मोक्ष का स्थान भी है।

यह मनुष्य जीवन मिला है, कुछ अनुकूलताएँ भी प्राप्त हैं, इसका मतलब है हम पूर्व पुण्य को भोग रहे हैं। पर यह तो क्षय की ओर जा रहा है। पुण्य और धर्म में अंतर है। धर्म आत्म शुद्धि का साधन है। पुण्य निर्जरा धर्म के साथ बंधने वाला कर्म है। पुण्य कर्म से अनुकूलताएँ और पाप कर्म से प्रतिकूलताएँ मिलती हैं।

पुण्य प्राप्त करना अध्यात्म की दृष्टि से कोई बड़ी-आदरणीय बात नहीं है। पुण्य की लालसा नहीं करनी चाहिए। इच्छा करें तो यह करें कि मेरी आत्मा शुद्ध बनें, मैं कभी मोक्ष को प्राप्त करूँ। मनुष्य जन्म मोक्ष का द्वार है। ऐसे थोड़े मनुष्य होते हैं, जो इस मनुष्य जीवन से मोक्ष चले जाते हैं।

मनुष्य गति तो नरकगति और तिर्यंच गति का भी द्वार है। और गति में तो और प्राणी जा सकते हैं, पर मोक्ष में तो मनुष्य गति के द्वारा ही जाया जा सकता है।

जो पुरुषार्थ को मानता है, लक्ष्मी उसका वरण करती है। भाग्य भरोसे बैठे रहने वाला अभागा है। पुरुषार्थ करने वाले को एक बार असफलता मिल सकती है, पर लगातार पुरुषार्थ करने वाला सफल अवश्य होता है। हमें सम्यक् पुरुषार्थ करना चाहिए।

मनुष्य जन्म के रूप में हमें एक पूँजी मिली है। पाप करने वाला नरक या तिर्यंच गति में जाता है, उसने मूल पूँजी गँवा दी। कोई आदमी जो न धर्म करता है, न पाप करता है, वह मनुष्य बन सकता है, मूल पूँजी सुरक्षित रह गई। जो तपस्या, साधना, धर्म, आध्यात्मिक सेवा आदि अच्छे काम करते हैं, वे मनुष्य मरकर देव गति में जा सकते हैं, कोई मोक्ष में भी जा सकता है, इसका मतलब मूल पूँजी को कितना बढ़ा लिया।

मनुष्य जन्म के रूप में हमें महत्त्वपूर्ण अवसर मिला है। गृहस्थ जीवन में पैसा कुछ है, पर सब कुछ नहीं है। येन-केन प्रकारेण आदमी पैसा कमाने का प्रयास न करे। पैसे के साथ शांति रहे। ईमानदारी बड़ी संपत्ति है। कौड़ी के लिए करोड़ को न खोएँ। बेईमानी का पैसा अशुद्ध पैसा है। सद्गृहस्थ बनकर पाप के पैसे से बचने का प्रयास करें। इच्छाओं की सीमा करें।

व्यक्तिगत जीवन में पैसा होते हुए भी सादगी और शांति रहे। जीवन में संयम रहे। गृहस्थ जीवन में अर्थ, काम के साथ धर्म और मोक्ष की बात भी रहे। आत्मा के लिए भी कुछ समय निकालें। हर काम के साथ धर्म को जोड़ दें।

शांति से जीएँ, सत्पुरुषार्थ करें, धर्म को भी जीवन में रखें। हमारा ये जीवन भी अच्छा और आगे का भी अच्छा।

आज रासीसर आना हुआ है। हम तीन बातें बताते रहें हैं–सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। स्थानीय लोगों को तीनों प्रतिज्ञाएँ स्वीकार करवाई।

रासीसर जो मुनि जितेंद्र कुमार जी एवं मुनि नयकुमार जी की पैतृक भूमि है। दोनों मुनिवृंद ने अपनी पैतृक भूमि पर पूज्यप्रवर के पधारने पर स्वागत किया।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि भारत की अध्यात्म प्रधान संस्कृति ने ऋषियों-मुनियों को सदैव सम्मान दिया है। विरले लोग होते हैं, जो आत्मा के शुद्ध स्वरूप परमात्मा को पाना चाहते हैं, पर कईयों को उस मार्ग को बताने वाले नहीं मिलते हैं। मार्ग उपलब्ध नहीं होता है। मार्ग उपलब्ध न होने पर वह इधर-उधर भटक जाता है, परमात्म पद को प्राप्त नहीं कर सकता है। अच्छे गुरु परमात्म पद का मार्ग उपलब्ध करा सकते हैं।

साध्वी पुलकितयशा जी एवं साध्वी कुसमप्रभाजी ने गीत से पूज्यप्रवर का अभिवंदन किया एवं अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुनील सुराणा, तेरापंथ महिला मंडल, रासीसर ग्राम सरपंच हरिराम सीगड़, हिमांशी सुराणा, यश आंचलिया, दर्शन सुराणा, मुदित सुराणा, कन्या मंडल, गंवरा देवी छाजेड़, वीरेंद्र छाजेड़, छाजेड़ परिवार की बहनें, रुची जैन ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि शांति पाने के लिए गुरु चरण में आना होता है।

जीवन शांतिमय बनाने के लिए पाएँ संतों से...

(पृष्ठ २ का शेष)

हमें वर्तमान को देखना चाहिए और भविष्य पर भी ध्यान देना चाहिए। आदमी का आगे जीवन भी अच्छा रहे, उसके लिए आदमी धर्म के पथ पर, त्याग-संयम के पथ पर चले। त्याग-संयम कल्याणकारी होता है। हमारे जीवन की गाड़ी में ज्ञान की लाईट और संयम का ब्रेक चाहिए तो यह जिंदगी की कार अच्छी तरह चल सकती है। गंतव्य तक अच्छी तरह पहुँच सकती है।

हम ज्ञान-बुद्धि के द्वारा दूसरों का भला भी कर सकते हैं। हमारी बुद्धि शुद्धि-युक्त हो। भावात्मक शुद्धि-बुद्धि को शुद्ध बना सकती है। बुद्धि अपने आपमें बल है। मैं व्यक्तिगत रूप से बुद्धि का सम्मान करता हूँ। बुद्धि से आदमी कितने बढ़िया काम कर सकता है। अणुव्रत व प्रेक्षाध्यान से हमारे राग-द्वेष कमजोर पड़ सकते हैं। संतों की जो अच्छी वाणी है, उनको पढ़ने का, जानने का प्रयास हो व जीवन में उतारने का प्रयास हो तो ये वाणी हमारे लिए कल्याणकारी हो सकती है।

हमारे जीवन में सम्यक् ज्ञान, सम्यक् आचार हो। ज्ञान के प्रकाश व संयम से आगे का जीवन भी अच्छा बन सकता है। साध्वी हुलासांजी की सहवर्ती साध्वियाँ हमें मिल गई हैं। तीनों साध्वियाँ खूब समाधि में रहें, खूब अच्छा काम करती रहें।

साध्वीप्रमुखाजी ने कहा कि संत के घर में आगमन से लोहा भी सोना बन जाता है। व्यक्ति का जीवन बदल जाता है। प्रवाह बदल जाता है। संत जहाँ जाते हैं, कल्याण का कार्य करते हैं। सज्जन व्यक्तियों का संग जिसे उपलब्ध हो जाता है, उसे सब कुछ मिल जाता है। साधु कल्पवृक्ष कामधेनू और चिंतामणी रत्न के समान होते हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में साध्वी समन्वयप्रभाजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल, जीतमल बांठिया (सभाध्यक्ष), ज्ञानशाला, तेयुप अध्यक्ष ऋषभ आंचलिया, नगरपालिका चेयरमैन ओमप्रकाश मूंदड़ा, हनुमानमल, आनंदमल, अंकुर लूणिया, भरत नाहर, लक्ष्य नाहर, करणी मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष बादल सिंह, किरण सिपानी, नयनतारा नाहर, विद्यालय से लादुलाल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि प्रकृति के साथ छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए।

ज्ञान और धन का कभी ना करें घमंड : आचार्यश्री महाश्रमण

पलाना, १० जून, २०२२

आचार्य तुलसी के परंपर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी अपने दादा गुरु की महाप्रयाण भूमि की ओर अग्रसर हैं। कल गंगाशहर की सीमा में परम पावन पधारने वाले हैं। आज परमपूज्य का पलाना पदार्पण हुआ।

तेरापंथ के सारथी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि मानव जीवन को जीने का एक लक्ष्य होना चाहिए–मोक्ष की प्राप्ति। मैं, मेरी आत्मा मोक्ष की दिशा में आगे बढ़े। मोक्ष वह स्थिति है, जहाँ कोई दुःख नहीं होता। सारे दुःखों से मुक्ति मिल जाती है। न वहाँ शरीर होता है, न वाणी रहती है, न मन होता है।

मोक्ष की प्राप्ति के लिए साधना की अपेक्षा होती है। अपनी चेतना को विकृतियों से मुक्त बनाने की अपेक्षा होती है। कषायमुक्त होना ही मुक्ति है। जब तक राग-द्वेष है, उसके लिए मोक्ष का द्वार खुलता नहीं है। जो चंडैल-गुसैल होता है, वो मुक्ति को प्राप्त नहीं हो सकता। गुस्सा तो मनुष्य का शत्रु है। आदमी को शांत रहना चाहिए।

एक दृष्टांत से समझाया कि मानव जीवन मिला है, संत नहीं बन सको तो दुर्जन तो नहीं बनना चाहिए। सदाचार शांति का जीवन हो। भला किसी का न कर सको तो बुरा तो किसी का नहीं करना चाहिए। मानव जीवन में सज्जनता होनी चाहिए। किसी प्राणी को दुःख नहीं देना चाहिए।

घमंड़ भी नहीं करना चाहिए। ज्ञान हो या धन किसी का भी घमंड़ नहीं करना चाहिए। चुगलखोरी नहीं करनी चाहिए। बिना सोचे कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए। अनुशासन में रहें। विनय करें, धर्म को समझें। मानव जीवन अच्छा रहे। धार्मिक साधना करें। सदाचार, सद्विचार हो तो मोक्ष प्राप्त हो सकता हैं

गृहस्थ जीवन में भी मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। किसी की धार्मिक मदद करें। हम मोक्ष प्राप्ति के लिए शांति से जीएँ। अच्छी धर्म की साधना करें।

पूज्यप्रवर के स्वागत में पलाना की ओर से परताराम चौधरी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की, संस्मरण बताए।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि हम यथार्थ को ग्रहण करें। विरोधों से डरें नहीं।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 - 26 जून, 2022

✦ *दूसरों पर अनुशासन करने वाला पहले स्वयं पर अनुशासन करे तो व्यवस्था सम्यक् हो सकती है।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

ध्यान और स्वाध्याय हैं आत्मशुद्धि के साधन : आचार्यश्री महाश्रमण

भामटसर, ७ जून, २०२२

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी गंगाशहर की ओर अग्रसर हैं। नोखा गाँव में रात्रि प्रवास कर आचार्यप्रवर ६ किलोमीटर विहार कर भामटसर पधारे। मुख्य प्रवचन में परम पावन महामनीषी ने फरमाया कि आत्मा की सिद्धि कैसे हो सकती है? उसके उपायों की चर्चा शास्त्र में की गई है। बताया गया है कि जो व्यक्ति स्वाध्याय और सध्यान में रत रहने वाला होता है, भावों में पाप नहीं होता, तपस्यारत रहता है, ऐसे व्यक्ति की आत्मा निर्मलता को प्राप्त हो जाती है।

स्वाध्याय भी एक आत्मशुद्धि का साधन है। ध्यान का भी अपना महत्त्व है। स्वाध्याय अनेक रूपों में किया जा सकता है। जिज्ञासा, अध्ययन, चिंतन-मनन करना भी स्वाध्याय है। धर्मकथा भी एक स्वाध्याय है।

ध्यान की साधना की भी एक प्रविधि है, एक प्रयोग है। मन को कैसे एकाग्र किया जा सके, कैसे निर्विचारता की स्थिति में प्रवेश पाया जा सके। मन को कैसे निर्मल बनाया जा सके। प्रेक्षाध्यान भी ध्यान की एक विधि है।

ध्यान के चार प्रकार बताए गए हैं–आर्त, रौद्र, धर्म, शुक्ल। आर्त और रौद्र तो अशुभ ध्यान हैं। धर्म और शुक्ल सद्ध्यान है। राग-द्वेषमुक्त रहना, मन को किसी एक जगह एकाग्र रखना, वाणी का संयम रखना यह ध्यान आत्मशुद्धिकारक बन सकता है।

जप व ध्यान करते समय मन में विचारों का प्रवाह चलता है। पर इसके लिए माला जप को न छोड़ें, गलत विचारों को छोड़ें। अच्छे मंत्र का पाठ करना शुरू कर दें। जैसे मूल बीमारी के लिए दवा तो लेनी होती है, पर साइडइफेक्ट के लिए दूसरी गोली लेनी होती है। मन में ये चिंतन करें कि ये गलत विचार मेरे नहीं है, मेरा इनको समर्थन नहीं है। ये गलत विचारों का प्रतिकार है।

शरीर को स्थिर रखना ध्यान का एक अंग हो जाता है। वाणी का संयम भी और मन की चंचलता का निवारण भी ध्यान के अंग हैं। राजर्षि प्रसन्नचंद्र के प्रसंग से समझाया कि भावों से व्यक्ति कहाँ से कहाँ पहुँच जाता है। भीतर का मन का ध्यान कहाँ तो नरक में ले जाने वाला और कहाँ केवलज्ञान करा देने वाला हो जाता है। मोक्ष में ले जाने वाला बन सकता हैं

यह सब भावों का जगत है, हम सत्-प्रयास करें कि हमारा भावात्मक जगत निर्मल रहे, राग-द्वेष मुक्त रहें। मन, वाणी और शरीर पर कंट्रोल रखना, ऐसी हमारी ध्यान की साधना हमारी आत्मा को निर्मल बनाने वाली सिद्ध हो सकती है।

निर्जरा के बारह भेदों में ध्यान भी एक भेद है। ध्यान में शरीर की स्थिरता, शिथिलता और श्वास को दीर्घ कर लें। श्वास लेते समय णमो और छोड़ते समय सिद्धाणं का उच्चारण करना सीधा सा उपयोग है। लेटकर या बैठकर कैसे ही कर सकते हैं। हम ध्यान-स्वाध्याय जितने उपयोग हो सके करें और मोक्ष की साधना में आगे बढ़ें, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में ज्ञानशाला बीकानेर ने सुंदर प्रस्तुति दी। बीकानेर की महिलाओं ने गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि भीतर ही भीतर रमण करने वाला वीतराग बन सकता है। चोरी का फल गलत है। पर सामायिक के संकल्प से कल्याण हो सकता है।

महिला मंडल के विविध आयोजन

श्रीउत्सव कार्यक्रम का आयोजन

दिल्ली।

अभातेममं द्वारा निर्देशित दिल्ली महिला मंडल द्वारा आयोजित श्रीउत्सव का आयोजन किया गया। दिल्ली सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष सुखराज सेठिया द्वारा कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। शासनश्री साध्वी संघमित्राजी के सान्निध्य में साध्वी डॉ० सूरजयशाजी ने नमस्कार महामंत्र द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ कर मंगलपाठ सुनाया। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया।

अध्यक्षा मंजु जैन ने कार्यक्रम में पधारे सभी का स्वागत-अभिनंदन किया। दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित की। सभा से पधारे सभी गणमान्य व्यतियों का साहित्य से सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बीजेपी महिला अध्यक्ष योगिता सिंह और उप निरीक्षक दिल्ली पुलिस किरण सेठी की उपस्थिति रही। आपने महिला मंडल के कार्यक्रमों की सराहना की और सभी का हौसला बढ़ाया।

इस रंगारंग कार्यक्रम में अलग-अलग क्षेत्रों से आकर बहनों ने विभिन्न प्रकार के स्टॉल लगाए। अभातेममं द्वारा निर्देशित ४ योजनाओं का भी एक काउंटर लगाया गया, जिसमें बहनों ने ४ योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी। खाने-पीने के अलावा कुल ६० स्टॉल लगाए गए। अनेकों मनोरंजन के कार्यक्रम के साथ-साथ ज्ञानवर्धक व रोचक प्रतियोगिताएँ भी की गई। सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

नारी इन साड़ी, नारी सजाओ शृंगार अखबार के साथ प्रतियोगिता को सभी ने सराहा। कार्यक्रम में महासभा उपाध्यक्ष सुमन नाहटा, अभातेममं पूर्वाध्यक्ष पुष्पा बैंगानी, क्षेत्रीय प्रभारी मंजु भूतोड़िया, सुनीता जैन, शिल्पा बैद, कुसुम बैंगानी एवं अन्य सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण, दिल्ली महिला मंडल कोषाध्यक्ष, संरक्षिकागण, परामर्श मंडल, संयोजिकाएँ, उप-संयोजिकाएँ, कार्यकारिणी सदस्य एवं संपूर्ण महिला मंडल सहित लगभग ७०० बहनों एवं भाइयों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम संयोजिका कविता बरड़िया एवं इंदिरा सुराणा के अथक श्रम से कार्यक्रम सफल रहा। अंत में मंत्री यश बोथरा ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

रूपांतरण शिल्पशाला संयम का आयोजन

बलांगीर।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में अभातेममं द्वारा निर्देशित रूपांतरण शिल्पशाला 'संयम' बलांगीर महिला मंडल द्वारा आयोजित हुई। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि संयम की चर्चा प्रायः प्रवचन में करते हैं, क्योंकि जैन शास्त्र आगम में संयम के बारे में बहुत अधिक विस्तार से वर्णन मिलता है। संयम को सुख की खान बताया। संयम सुखी शांत जीवन का आधार है।

कार्यशाला का शुभारंभ श्वेता जैन के मंगलाचरण से हुआ। महिला मंडल मंत्री सरिता मोदी ने विषय पर प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन महिला मंडल अध्यक्ष ममता जैन ने किया।

संयम कार्यशाला का आयोजन

राउरकेला।

तेममं ने तीन कार्यक्रम संयम कार्यशाला, पर्यावरण दिवस और पुरानी ढालों का पुनरावर्तन कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ शुभारंभ किया गया। संगीता दुगड़ ने प्रेरणा गीत का संगान सब बहनों के साथ मिलकर किया। मंडल की अध्यक्षा सरोज गोलच्छा ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया और संयम का महत्त्व बताया। तथा साथ ही पर्यावरण दिवस पर पेड़ लगाने की भी प्रेरणा दी।

ज्योति भंसाली ने संयम पर प्रकाश डाला। मंडल की सचिव विनीता जैन ने सभी को प्लास्टिक इस्तेमाल नहीं करने की सलाह दी और पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए वृक्षारोपण को उत्तम बताया। कविता डागा और हेमश्री भंसाली ने पुरानी ढालों का पुनरावर्तन किया। कार्यशाला का संयोजन संगीता दुगड़ ने और आभार ज्ञापन पूर्व अध्यक्षा पुनीता बोथरा ने किया।

अहिंसा, संयम और तप रूपी धर्म है...

(पृष्ठ १ का शेष)

तुम्हें कोई गाली दे, मारे-पीटे, कोई अपमान कर दे, वह तुम्हें अच्छा नहीं लगता तो तुम भी दूसरों के साथ ऐसा मत करो। सबको अपने समान समझो। यह अहिंसा की चेतना है। साधु के तो जिंदगी भर हिंसा से विरत रहने का संकल्प होता है।

जैन साधुओं के तो अनेक अहिंसा से संबंधित नियम हैं। साधु भ्रामरीवृत्ति से जीवन चलाएँ। गृहस्थों के जीवन में भी अहिंसा की भावना रहे। व्यवहार में भी अहिंसा रखें। आदमी गुस्सा न भी करे। गुस्सा करना आदमी की कमजोरी है। आदमी धैर्य-शांति रखे। आदमी दया, करुणा रखे। आदमी खानपान, वाणी का संयम रखे। झूठा आरोप न लगाएँ। कटु भाषा से बचें, वाणी में मधुरता रखें। आदमी यथार्थ भाषी, मधुर भाषी और मितभाषी हो।

स्वाध्याय-ध्यान करना भी तप है। जीवन में तप होता है, तो मंगल होता है। अहिंसा, संयम, तप मंगल है। धर्म अपने आपमें मंगल है। जिसका मन सदा धर्म में रमा रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं। देवों के लिए साधु वंदनीय है। साधु के लिए कोई देवता वंदनीय नहीं होता है।

जीवन में नशामुक्तता रहे। हम लोग तीन बातें सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति की बताते हैं। ये तीन बातें जीवन में रहती हैं, तो जीवन अच्छा रह सकता है। आज बीकानेर आना हो गया है। इन तीन बातों से आत्मा का कल्याण हो सकता है। २०१४ में भी बीकानेर आना हुआ था। बीकानेर का अपना महत्त्व है।

आज बाहर के लोग भी काफी संख्या में पहुँचे हैं। पंजाब से भी अच्छी संख्या में श्रावक आए हैं। २०२४ का चातुर्मास यथासंभव ५ सितंबर को फरमाने का भाव है।

पंजाबवासियों को पूज्यप्रवर ने लगभग ७०-७५ मिनट की सेवा करवाई। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि पंजाब की लंबी यात्रा करने का भाव २०२६ के बाद है।

मुख्य मुनिप्रवर ने कहा कि भारतीय साहित्य में गुरु का बहुत महत्त्व है, ऊँचा स्थान है। गुरु शब्द का अर्थ है–गु यानी अंधकार और रु यानी विरोध करने वाले। जो अंधकार का विरोध करते हैं, वे गुरु होते हैं। गुरु हमारे अज्ञान और मोहरूपी अंधकार को दूर करते हैं। सच्चे गुरु की प्राप्ति होना भी बड़े भाग्य की बात होती है। हमारे जीवन में तीन चीजें–देव, गुरु और धर्म होते हैं। गुरु सच्चे नहीं तो देव और धर्म भी ठीक नहीं। हम गुरुदेव के प्रवचनों को जीवन में उतारने का प्रयास करें।

साध्वी कनकरेखाजी जिनका आगामी चातुर्मास बीकानेर होने वाला है, साध्वीश्री जी ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए बताया कि गुरु की सन्निधि जीवन की महान उपलब्धि होती है।

पूज्यप्रवर के स्वागत-अभिनंदन में तेरापंथ सभाध्यक्ष पदमचंद बोथरा, जैन पाठशाला अध्यक्ष विजयचंद कोचर, महिला मंडल अध्यक्षा प्रेम देवी नौलखा, तेरापंथ समाज की समुह प्रस्तुति, संजय बोथरा, टीम अनोपचंद बोथरा, बोथरा परिवार, दीप्ति बोथरा, त्यागवृद्धि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। आभार ज्ञापन जेठमल बोथरा ने किया।

जैविभा व अभातेयुप व समण संस्कृति संकाय के संयुक्त तत्त्वावधान में सम्यक् दर्शन कार्यशाला एवं मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के बैनर का अनावरण पूज्यप्रवर की सन्निधि में किया गया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के १०३वें जन्म दिवस पर

प्रज्ञा पुंज आचार्यश्री महाप्रज्ञजी

❐ मुनि कमल कुमार ❐

संसार में आने वाले को एक दिन निश्चित जाना पड़ता है। परंतु जो व्यक्ति अपनी कर्मजा शक्ति का जागरण कर कुछ करिश्मा दिखा जाते हैं वे जन-जन के दिल दिमाग में अपना स्थान बना लेते हैं। ऐसे ही महापुरुष थे तेरापंथ धर्मसंघ के दशमेश आचार्यश्री महाप्रज्ञजी।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का जन्म नाम नथमल था। उनका जन्म झुंझनू जिले के टमकोर गाँव में तोलारामजी चोरड़िया के घर माता बालूजी की कुक्षी से हुआ था। बाल्यकाल से ही आप प्रतिभावान थे। मात्र ढाई वर्ष की आयु में ही आपके पिताश्री का देहावसान हो गया। परिवार में आजीविका की समस्या हो गई, आपका शैशव काल खींवसर के बच्छावत परिवार में व्यतीत हुआ। ननिहाल वालों ने नथमल की हर तरह से सुरक्षा की। लंबे समय तक गाय के दूध से उदरपूर्ति का क्रम रहा ताकि बालक का दिमाग तेजस्वी बना रहे।

बड़े होने पर पारिवारिक जन टमकोर ले आए वहाँ प्रवासित मुनि छबीलजी, मुनि मूलचंद जी का ध्यान बालक नथमल की तरफ केंद्रित हो गया और प्रारंभिक ज्ञान करवाया। जिससे बालक के मन में वैराग्य भाव का जागरण हुआ। मुनिद्वय की प्रेरणा से तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टमाचार्य के दर्शन गंगाशहर में किए। प्रथम दर्शन और प्रवचन से नथमल का वैराग्य और अधिक पुष्ट हुआ और प्रतिक्रमण का आदेश भी मिल गया।

पूज्य कालूगणी गंगाशहर चातुर्मास के पश्चात सरदारशहर मर्यादा महोत्सव के लिए पधार रहे थे। उस समय नथमल ने माता बालूजी के साथ भादासर में गुरुदेव के दर्शन किए और दीक्षा की अर्ज की। पूज्य गुरुदेव ने नथमल को दीक्षा की स्वीकृति प्रदान कर दी परंतु माता को अनुमति नहीं मिली। नथमल ने आग्रह किया कि माता को भी दीक्षा की स्वीकृति प्रदान कराएँ, कालूगणी ने फरमाया कि अभी केवल तुम्हें ही अनुमति दी हैं, परंतु नथमल के विनम्र निवेदन पर गौर करते हुए माँ-बेटे दोनों को अनुमति मिल गई।

सरदारशहर में भंसाली जी के बाग में आपकी दीक्षा संपन्न हुई। दीक्षा के पश्चात पूज्यप्रवर ने मुनि तुलसी के पास वंदना करवा दी। मुनि तुलसी के कुशल अनुशासन में आपका अध्ययन अध्यापन चला। मुनि तुलसी जब आचार्य बने आपको उनकी सेवा का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। कहा भी जाता है–'जैसा संग वैसा रंग' यह युक्ति पूर्ण सत्य चरितार्थ हुई और आप आचार्यश्री तुलसी के सक्षम पट्टधर बने।

आपकी विनम्रता, विद्वता, सरलता, समर्पण, गुरुभक्ति, आचारनिष्ठा, अनुत्तर थी। इन्हीं गुणों को देखकर गुरुदेव तुलसी ने अपने रहते ही अपना आचार्य पद विसर्जन कर आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। तेरापंथ धर्मसंघ के लिए यह प्रथम घटना थी।

आचार्य महाप्रज्ञजी ने प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान के द्वारा व्यक्तित्व निर्माण का महनीय कार्य कर जैन-अजैन सबको शांतिमय जीवन जीने की कला सिखाई। अनेक आगमों का संपादन कर अनेक पुस्तकें लिखकर संसार की जटिल समस्याओं का समाधान प्रदान किया, जिसे युग नहीं शताब्दियाँ याद करेंगी।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी जीवन के दशवें दशक तक पूर्ण सक्रिय रहे। यात्रा, प्रवचन, पठन-पाठन, लेखन, संघ संचालन में अपनी शक्ति का पूरा नियोजन करते रहे। तेरापंथ धर्मसंघ में इतनी लंबी अवस्था प्राप्त करने वाले और अपने गुरु के रहते हुए आचार्य पद पर सुशोभित होने वाले प्रथम थे।

उनकी विनम्रता, पवित्रता, सरलता, सहजता, विद्वता, कर्तव्यपरायणता, प्रशंसनीय और स्तुत्य ही नहीं सभी के लिए अनुकरणीय है। उनके १०३वें जन्मदिवस पर यह मंगलकामना करता हूँ कि उनके द्वारा प्रदत्त शिक्षाओं को आत्मसात करके स्व पर कल्याणकारी बनूँ।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के प्रति अर्हम्

● साध्वी राकेश कुमारी ●

जुड्यो महाश्रमण दरबार, आयो मनोनयन सुखकार।
साध्वीप्रमुखा ने बधावांजी, मंगल तिलक लगावांजी।।
समण श्रेणी री प्रथम दीक्षा, प्रथम नियोजिका बण्या थे।
समण श्रेणी री प्रथम यात्रा, देश-विदेश गया थे।
गुरुदृष्टि स्यूं कियो प्रचार, पायो जनता रो सत्कार।
श्रद्धा सुमन बिछावांजी, थांनै आज बधावांजी।।१।।

वर्धापण री मंगल घड़ियां, श्रमणी गण खुशहाल।
विनय समर्पण प्रबुद्ध साध्वी, है फुर्तीली चाल।
आई गण में नई बहार, करते वंदन बार हजार।
मौत्यां चौक पुरावांजी, मंगल तिलक---।।२।।

त्रयगुरु री दृष्टि आराधी, दिल में स्थान जमायो।
मुख्य नियोजिकाजी से, साध्वी प्रमुखा को पद पायो।
सरदारशहर की पुण्य धरा पर, खुशियाँ बाँटें मोदी परिकर
मंगल तिलक---।।३।।

महाप्रज्ञ वांङ्मय संपादन, जग में पहचाना बनाई।
स्वर्गा स्यूं शासणमाता दें आशीर्वर वरदाई।
स्वस्थ निरामय रहो शुभंकर, जीवन अभयंकर क्षेमंकर।
मंगलभावना भावांजी, थांनै आज बधावांजी।।४।।

साध्वी समाज रो कर विकास, नूतन इतिहास रचाओ।
गणगणपति रा बण सहयोगी गण री शान बढ़ाओ।
राकेश अंतर रा उद्गार, सुणलो श्रमणी गण सिणगार।
मंगल तिलक---५।।

लय : नीले घोड़े रा असवार---

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

दिल्ली।

चुनीलाल सिंघी चुरू निवासी, दिल्ली प्रवासी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुभाष दुगड़, हिम्मत राखेचा, सौरभ आंचलिया ने संपूर्ण विधि-विधान से संपन्न करवाया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। संस्कारक व तेयुप, दिल्ली मंत्री सौरभ आंचलिया ने सिंघी परिवार को शुभकामनाएँ देते हुए तेयुप की तरफ से आभार ज्ञापन किया। तेयुप की तरफ से सिंघी परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नूतन गृह प्रवेश

भुज।

कुसुम-जितेंद्र शाह के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक नरेंद्र भाई मेहता, भरत बाबरिया ने संपन्न करवाया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ। कार्यक्रम में तेयुप के अध्यक्ष आशीष भाई बाबरिया और सहमंत्री भावित मेहता उपस्थित रहे।

नूतन गृह प्रवेश

बैंगलुरु।

जोजावर निवासी, बैंगलुरु प्रवासी महवीर चंद संतोष भाई गीड़िया के पुत्र मोहित, मनीष गीड़िया के यहाँ गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से किया गया।

संस्कारक विक्रम दुगड़ एवं जितेंद्र घोषल ने जैन मंत्रोच्चार के द्वारा कार्यक्रम संपादित किया। परिवार से मोहित गीड़िया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए संस्कारकों का आभार व्यक्त किया।

नूतन गृह प्रवेश

उधना।

लोढ़ा परिवार में जैन संस्कार विधि से गृह प्रवेश कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र एवं मंगलाचरण द्वारा हुई। संस्कारक अनिल चंडालिया, महावीर संचेती, नेमीचंद कावड़िया और सुभाष चपलोत ने विधिवत मंत्रोच्चार के द्वारा जैन संस्कार विधि से कार्यक्रम संपन्न करवाया।

विमल लोढ़ा ने पधारे हुए सभी संस्कारकों, उधना सभा, तेयुप एवं परिवार के सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

पाणिग्रहण संस्कार

साउथ कोलकाता।

राजकोट निवासी, साउथ कोलकाता प्रवासी मुकेश शाह के सुपुत्र दर्शन एवं टमकोर निवासी कोलकाता प्रवासी सुशील चोरड़िया की सुपुत्री लेखा का विवाह संस्कार अभातेयुप संस्कारक एवं उपासक मालचंद भंसाली एवं सह-संस्कारक सुशील बाफना ने जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया।

परिषद के मंत्री ने रोहित दुगड़ तथा परिवार जनों का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में टीपीएफ के अध्यक्ष आलोक चोपड़ा एवं मंत्री प्रवीण सिरोहिया की उपस्थिति रही। परिषद की ओर से दोनों परिवारों को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

पाणिग्रहण संस्कार

बालोतरा।

बालोतरा निवासी अशोक सालेचा की सुपुत्री दक्षा का शुभ पाणिग्रहण संस्कार बालोतरा निवासी अशोक वडेरा के सुपुत्र केतन के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक रमेश भंसाली और रोशन बागरेचा ने मंत्रोच्चार एवं संपूर्ण विधि-विधान से संपन्न करवाया।

तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल और मंत्री नवीन सालेचा ने वर-वधू को मंगलभावना पत्रक भेंट किया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा मंत्री महेंद्र बैद और कार्यसमिति सदस्य संजय सालेचा भी उपस्थित हुए।

✦ *प्रेक्षाध्यान व्यक्ति में भावात्मक परिवर्तन घटित करने का उपक्रम है। इस दृष्टि से यह अणुव्रत का एक सहायक प्रकल्प कहा जा सकता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीप्रमुखाश्री के मनोनयन पर आध्यात्मिक काव्यांजलियाँ / उद्‌गार

अर्हम्

● **शासनश्री मुनि विजय कुमार** ●

नवनियुक्त साध्वीप्रमुखा का गौरव गाएँ हम,
भक्ति का थाल सजाएँ हम।।

युगप्रधान आचार्यप्रवर ने अनुपम काम किया है,
षष्ठीपूर्ति समारोह पर गण को वरदान दिया है,
रिक्त स्थान भर दिया गुरु ने मोद मनाएँ हम।।१।।

साध्वीगण निश्चिंत हुआ साध्वीप्रमुखा को पाकर,
मिली अनुभवी सती शेखरां, जीवन गुण रत्नाकर,
पथ दर्शन आचार्यत्रयी का लाभ उठाएँ हम।।२।।

प्रमुखाश्री नित स्वस्थ रहें यह दिली भावना सबकी,
मस्त और आश्वस्त रहें यह मनोकामना सबकी,
गणदेवी पर नव आशा के दीप जलाएँ हम।।३।।

शासनमाता के संग रहकर सीखी कई कलाएँ,
अब गुरुवर की सेवा में रह जीवन ज्योति जलाएँ,
'विजय' दीवाली धर्मसंघ में सदा मनाएँ हम।।४।।

लय : जवाहरलाल बनेंगे हम---

अर्हम

● **समणी मृदुप्रज्ञा** ●

होऽऽ झूमझूम गुण गाऊँ रे तेरापंथ सरताज।
गुरु दर्शन पा हरसाऊँ मैं।।

युगप्रधान गुरुवर महाग्यानी,
दीक्षा दिवस पर की फरमानी,
सुदी चौदस दिन मंगल गाया,
साध्वीप्रमुखा चयन लुभाया।।१।।

शासनमाता को साज दिया था,
तुलसी कृति ने तुम पर नाज किया था,
महाप्रज्ञ का काम सवाया,
महाश्रमण नव इतिहास रचाया।।२।।

स्वाध्याय ध्यान से जीवन संवारा,
गुरुभक्ति गुरुइंगित सहारा,
मौन समर्पण से जीवन सजाया,
मंत्र साधना ने ताज पहनाया।।३।।

चंदेरी धरती का गौरव बढ़ाया,
गण महिमा को शिखरों चढ़ाया,
साध्वी समाज देता बधाई,
जन-जन मन में खुशियाँ है छाई।।४।।

साध्वीप्रमुखा मनोनयन दिवस पर शत-शत वंदन

● **साध्वी काव्यलता, साध्वी ज्योतियशा, साध्वी सुरभिप्रभा** ●

तेरापंथ धर्मसंघ का यह स्वर्णिम दिवस इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों से अंकित हो गया। जिस पुण्य प्रभात में युगदृष्टा, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आदरास्पद मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी को अपनी पारखी नजरों से देखा, परखा और अपने दीक्षा दिवस पर आपश्री को तेरापंथ की यशस्वी साध्वीप्रमुखा पद पर प्रतिष्ठित कर संपूर्ण धर्मसंघ को निश्चिंत बना दिया। परम यशस्वी, परम प्रतापी आचार्यप्रवर के स्वर्णिम दीक्षा दिवस पर साध्वीप्रमुखा नियुक्ति का अद्‌भुत, अनिर्वचनीय दृश्य को देखकर हृदय सिंधु में हर्ष और उल्लास की उत्ताल तरंगे तरंगित होने लगी। काश! आज हम भी गुरुचरणों में साक्षात् इस मनोरम दृश्य को देख पाती। आज के उजले प्रभात पर हम अपने भाग्य की सराहना करते हैं कि हमें एक प्रबुद्ध, चिंतनशील, गंभीर, सरलमना, तपस्वीनी, साहित्यकार, प्रखरवक्ता, गहन प्रवचनकार आदि अनेकानेक गुणों से अभिमंडित साध्वीप्रमुखा का कुशल नेतृतव प्राप्त हुआ है।

गुरु का आशीर्वाद, गुरु की वत्सलता, गुरु का वरदान, गुरु का प्रसाद, गुरु द्वारा प्रदत्त कवल, गुरु का अनुग्रह, गुरु द्वारा प्रदत्त रजोहरण, आपश्री जैसी विनम्र समर्पित प्रमुखाश्री जी ही प्राप्त कर सकती है। आचार्य की दूरदर्शिता ने एक दिव्यमणि को संघ दिवट पर चढ़ाया। दिव्य मणि की दिव्य रोशनी से पूरा साध्वी समाज आलोकित होता रहेगा। कुशल अनुशासना में हम सब प्रसन्नमना चित्त समाधिपूर्वक साधना में अनवरत गति करते रहें, आगे बढ़ते रहें। आपश्री के यशस्वी जीवन की मंगलकामना के साथ अंतःकरण से सौ-सौ बधाइयाँ।

छाया हर्ष महान

● **शासनश्री साध्वी कुंथुश्री** ●

चंदेरी की लाल लाडली, उगा स्वर्ण विहान।
साध्वीप्रमुखा गण की शान।।

सरदारशहर की पुण्य धरा पर,
गुरु महाश्रमण ने मनोनयन कर।
विश्रुतविभा जी नाम सुनाया,
खुशियों का सागर लहराया।
गूँज उठा जनता का कण-कण, छाया हर्ष महान।।

सेवा ज्ञान विनय समर्पण,
गुरुइंगित में सब कुछ अर्पण।
जागरूक अप्रमत्त विलक्षण,
चिंतन में चातुर्य विचक्षण।
साधना स्वाध्याय ध्यान में रत, चरण सतत गतिमान।।

नियमित संयमित जीवनशैली,
समय प्रबंधन कला निराली।
फौलादी संकल्प तुम्हारा,
श्रमणी गण की करो रुखाली।
वर्धापन अभिवादन करते गाएँ मधुमय गान।
सौ-सौ बधाई देते तुमको गाएँ मंगल गान।।

लय : कितना बदल गया इंसान---

साध्वीप्रमुखाश्री मनोनयन समारोह का आयोजन

जसोल।

साध्वी रतिप्रभाजी के सान्निध्य में साध्वीप्रमुखा मनोनयन समारोह मनाया गया। साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की। साध्वी पावनयशा जी ने सुमधुर गीत के माध्यम से मंगलभावना प्रेषित की। साध्वी मनोज्ञयशा जी ने कहा आप शुरू से ही ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य में दृढ़ संकल्पी हैं। आगे भी इसी तरह रहें। आचार्यश्री ने आपको साध्वी समाज का दायित्व सौंपा है। अब हम कोशिश करें कि कैसे आपको अपनी तरफ से निर्भार करें।

साध्वी कलाप्रभाजी ने कहा सूरजमुखी दिन में खिलता है रात में नहीं, चंद्र मुखी रात में खिलता है दिन में नहीं, लेकिन हमारी साध्वीप्रमुखा अंतर्मुखी है जो दिन और रात दोनों में खिलती हैं।

साध्वी रतिप्रभाजी ने कहा कि समण श्रेणी की पहली समणी है। कितने वर्षों से आगम, लेखन जैसे अनेक कार्य संभाल रही है। हमारे गुरु महान हैं, महान है उनका निर्णय। तेरापंथ सभा अध्यक्ष मोतीलाल जीरावला, मंत्री माणकचंद संखलेचा, पूर्व अध्यक्ष डूंगरचंद सालेचा, महिला मंडल अध्यक्ष सोहनी देवी सालेचा सहित अनेक लोगों ने अपने भावों से नवनिर्वाचित साध्वीप्रमुखाजी को मंगलभावना प्रेषित की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मनोज्ञयशाजी ने किया।

चातुर्मासिक क्षेत्र में मुनिवृंद का स्वागत

सूरत।

मुनि उदित कुमार जी अपने सहवर्ती संत मुनि अनंत कुमार जी, मुनि रम्य कुमार जी एवं मुनि ज्योतिर्मय कुमार जी के साथ चातुर्मासार्थ सूरत पधारे। सूरत महानगर की सीमा में उन्होंने प्रवेश किया तो उनका तेरापंथी सभा एवं अन्य संस्थाओं द्वारा भावपूर्ण स्वागत किया गया।

इस अवसर पर स्वागत कार्यक्रम के पश्चात मुनिश्री सारोली स्थित मांगीलाल झाबक के प्रतिष्ठान पधारे, जहाँ मुनिश्री ने कहा कि इस दुनिया में कुछ पदार्थ द्रव्य मंगल होते हैं, कुछ पदार्थ भाव मंगल होते हैं। श्रीफल, कुमकुम, गुड आदि कुछ पदार्थ द्रव्य मंगल माने गए हैं। लेकिन अध्यात्म के क्षेत्र में भाव मंगल का बड़ा महत्त्व है। भाव मंगल में श्रेष्ठ है–धर्म।

मुनिश्री ने आगे कहा कि सूरत की जनता अध्यात्मप्रिय जनता है। अहिंसा और संयम का यथासंभव पालन करती है। मुनिश्री ने तेरापंथी सभा, महिला मंडल, तेयुप, अणुव्रत समिति, टीपीएफ आदि सभी संस्थाओं की सेवा प्रवृत्ति की प्रशंसा की।

मुनि अनंत कुमार जी ने कहा कि सूरत मेरी कर्मभूमि रही है। २३ वर्ष पूर्व मेरी दीक्षा गुरु आज्ञानुसार सूरत में ही मुनि सुमेरमलजी स्वामी के करकमलों से हुई थी। तत्पश्चात पहली बार गुरु आज्ञा से सूरत आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सूरत का चातुर्मास मेरे लिए विकास के नए द्वार उद्‌घाटित करने वाला सिद्ध होगा ऐसा दृढ़ विश्वास है। मुनि रम्य कुमार जी एवं मुनि ज्योतिर्मय कुमार जी भी उपस्थित रहे।

तेरापंथी सभा, सूरत के अध्यक्ष हरीश कावड़िया ने कहा कि मुनिश्री परम विद्वान् संत हैं। उनका चातुर्मास मिलना सूरत का सौभाग्य है। मैक्स प्योर वॉटर सिस्टम के कैलाश झाबक ने स्वागत वक्तव्य दिया। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया। संपत झाबक ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा के मंत्री नरपत कोचर ने किया।

ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता का आयोजन

सादुलपुर।

आचार्यश्री महाश्रमण जी की महती कृपा से यहाँ साध्वीप्रज्ञावती जी का पधारना हुआ। छाजेड़ भवन में विराजमान साध्वीश्री जी के पधारते ही बृहदमंगलपठ, सुबह-रात्रि में दोनों समय प्रवचन, गुरुवंदन, ज्ञानशाला आदि सभी का श्रीगणेश हो गया।

कमप्यूटेशन–ज्ञान वर्धक प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसमें बड़ी संख्या में भाई-बहन, बच्चों ने भाग लिया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी का दीक्षा दिवस युवाओं को समर्पित

भारतीय ऋषि परंपरा के महान संदेश वाहक है आचार्यश्री महाश्रमण

बोरावड़।

मानवता के महान संदेशवाहक भारतीय ऋषि परंपरा के एक महान संत हैं—आचार्य महाश्रमण। जिन्होंने अपनी अहिंसा की प्रलंब यात्रा कर वर्ण, जाति, संप्रदाय से मुक्त रहकर जन-मानस को मैत्री, करुणा, सेवा, सद्भावना और समन्वय का संदेश दिया। २० राज्यों व तीनों देशों की पदयात्रा करना इतिहास का दुर्लभ दस्तावेज बन गया है। नैतिकता, सद्भावना और जन-जन को नशामुक्ति की दिशा में प्रेरित करने के लिए पदयात्रा करना आंतरिक अनुकंपा की भावना के बिना संभव नहीं है। ये विचार तेरापंथ भवन में तेयुप एवं तेमम, बोरावड़ के संयुक्त तत्त्वावधान में आचार्यश्री महाश्रमण जी के जन्मोत्सव, पट्टोत्सव, दीक्षा दिवस पर मुनि चैतन्य कुमार 'अमन ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहे।

मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने कहा कि राजस्थान के सरदारशहर कस्बे में जन्म लेने वाले आचार्य महाश्रमण का जीवन नैतिक मूल्यों के विकास, सांप्रदायिक सौहार्द तथा अहिंसक चेतना के जागरण के लिए समर्पित है।

मुनि चैतन्य कुमार जी ने अपनी श्रद्धाप्रणत भावनाओं से आचार्य महाश्रमण जी के षष्टिपूर्ति व युगप्रधान अभिवंदना पर समग्र समाज के साथ उनके दीर्घायु-चिरायु होने की मंगलकामना करते हुए समाज और राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण की भी कामना की।

मुनि सुबोध कुमार जी ने मंच का संचालन करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण जी की अनेक विशेषताओं का उल्लेख किया। अर्हत वंदना के सामुहिक संगान के पश्चात आभा गेलड़ा ने महाश्रमण अष्टकम् से मंगलाचरण किया। तेयुप मंत्री विकास चोरड़िया ने स्वागत भाषण के साथ अपनी प्रस्तुति दी। युवती बहनों द्वारा महाश्रमण आरती प्रस्तुत की गई। महिला मंडल ने गीत का संगान किया। प्रदीप छाजेड़ ने युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की महिमा को चिंतनशील, युक्तिसंगत, तार्किक, स्पष्ट व कम शब्दों में सुंदरता से प्रस्तुत किया। अंकित चोरड़िया, भावना कोटेचा, कनिष्का बोथरा ने अपने गीत, वक्तव्य आदि से अभ्यर्थना की।

ज्ञानशाला के बालक-बालिकाओं ने संगीत की स्वर लहरियों पर धार्मिक प्रस्तुति दी। तेयुप अध्यक्ष गजेंद्र बोथरा व महिला मंडल अध्यक्ष शशि कोटेचा ने मुक्तक व वक्तव्य के द्वारा अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में तेयुप के संगठन मंत्री कैलाश गेलड़ा ने कार्यक्रम में उपस्थिति को लेकर सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

आचार्यश्री महाश्रमण अभ्यर्थना समारोह

कोटे (कर्नाटक)।

आचार्यश्री महाश्रमण जी का युगप्रधान अलंकरण दिवस व पदाभिषेक दिवस कोटे में मनाया गया। मुख्य वक्ता डॉ० रेणु कोठारी ने आचार्यश्री को विश्व की महान विभूति बताया। डॉ० साध्वी गवेषणाश्रीजी ने कहा कि काल के भाल पर स्वस्तिक उकेरने वाले सिद्धपुरुष का नाम है—महाश्रमण। श्रद्धा और समर्पण का नाम है—महाश्रमण। प्रज्ञा और पुरुषार्थ की प्रयोगशाला का नाम है—आचार्य महाश्रमण। आचार्य महाश्रमण दिव्यपुरुष और तेजोपुंज हैं। इनकी यशोगाथा दिग्दिगांत तक फैली हुई है।

साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि युगप्रधान वह होता है, जो युग की नब्ज को जानता है, जो युग की परिभाषा को जानता है, जो युग के अनुकूल चलता है, जो युग को नई दिशा बोध देता है। साध्वी दक्षप्रभाजी ने अपने आराध्य की अभिवंदना में एक सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की।

साध्वी मेरुप्रभाजी ने संयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी के महाश्रमण अष्टकम् के मंगलाचरण से हुई। स्वागत भाषण नारायण सिंह कुमावत ने प्रस्तुत की और धन्यवाद ज्ञापन मनोज गन्ना ने किया।

ज्ञानशाला की संयोजिका पायल कोठारी व कोमल पोखरना के नेतृत्व में बालक-बालिका की भावपूर्ण प्रस्तुति ने सबका मन मोह लिया। हुणसुर तेयुप अध्यक्ष किशोर सुकलेचा, मैसूर सभा अध्यक्ष शांतिलाल कटारिया, राजस्थानी समाज ने आचार्य अभ्यर्थना की। तेयुप अध्यक्ष विक्रम पितलिया व प्रियंका भटेवरा ने अपने विचार रखे। महिला मंडल ने गीतिका प्रस्तुत की। कन्हैयालाल दलाल, रतनलाल, ओम, पारसमल गन्ना, प्यारेलाल, गणपत, रवि, रतन, मंगलाराम सीरवि, गोपाल शर्मा आदि की उपस्थिति व दीपिका, दक्ष, ऋषभ, विनोद, माही, परी आदि बच्चों ने परिसंवाद प्रस्तुत किया।

के०आर० नगर, मैसूर, हुणसुर, होसकेट आदि गाँवों के लोगों ने अच्छी संख्या में उपस्थिति दर्ज कराई।

आध्यात्मिक मिलन - स्नेह सौहार्द के विकास की प्रेरणा देता है

पर्वत पाटिया।

मुनि उदित कुमार जी सारोली से विहार कर पर्वत पाटिया, तेरापंथ भवन पधारे जहाँ पर साध्वी लब्धिश्री जी के साथ उनका आध्यात्मिक संत मिलन हुआ। संतजनों के पारस्परिक सद्भावना के मनोरम्य दृश्य देखकर दर्शक भावविभोर हो उठे।

इस अवसर पर मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि संत भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति के संवाहक होते हैं। उसमें भी तेरापंथ जैन धर्मसंघ में तो पारस्परिक प्रम और सद्भावना कूट-कूटकर भरी गई है। हम सभी एक ही परिवार के सदस्य हैं, एक ही गुरु के शिष्य हैं इसलिए हम जब मिलते हैं तो अद्भुत आह्लाद और आत्मीयता की अनुभूति होती है। संतों का यह मिलन श्रावक समुदाय और सभी समाज जनों को भी स्नेह-सौहार्द के विकास की प्रेरणा देता है।

साध्वी लब्धिश्री जी ने कहा कि पूज्य गुरुदेव ने जब से मुनि उदित कुमार जी का चातुर्मास सूरत में फरमाया तभी से हम चातक दृष्टि से उनके पधारने की प्रतीक्षा कर रहे थे। मुनिश्री जी से मिलने की शुभ घड़ी आ गई और मुनिश्री से मिलकर हम अत्यधिक आनंद की अनुभूति कर रहे हैं। मुनिश्री अत्यंत श्रमशील एवं पुरुषार्थी संत हैं। उनकी वाणी आकर्षक एवं संघ प्रभावक है। उनकी अनेक विशेषताओं का लाभ सूरत की अध्यात्मप्रिय जनता को मिलेगा।

मुनि अनंत कुमार जी ने कहा कि साध्वी लब्धिश्री जी से मिलकर हमें आनंद की अनुभूति हो रही है। उन्होंने सूरत में धर्म की अलख जगाई है। संथारा साधक बाबूभाई मेहता सहित अनेक संथारा साधकों को उन्होंने सुदीर्घ समय तक चित्त समाधि प्रदान की है। साध्वीवृंद द्वारा मुनिश्री के स्वागत में समुह गीत की प्रस्तुति दी गई।

तेरापंथी सभा, सूरत के अध्यक्ष हरीश कावड़िया ने अपने अध्यक्षीय कार्यकाल की सफलता में मुनिश्री एवं साध्वीश्री के आशीर्वाद को योगभूत बताया। उधना सभा के अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर, प्रवक्ता उपासक श्रेष्ठ कार्यकर्ता अर्जुन मेड़तवाल, तेयुप पर्वत पाटिया के पूर्व अध्यक्ष कुलदीप कोठारी आदि ने अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल ने मंगलाचरण किया। संचालन तेयुप, पर्वत पाटिया के पूर्व अध्यक्ष चंद्र प्रकाश परमार ने किया।

संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन

शिरपुर।

संस्था शिरोमणि जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में खानदेश जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा द्वारा खानदेश, मराठवाड़ा, विदर्भ स्तरीय बालकों का ग्रीष्मकालीन पंच दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर मुनि आलोक कुमार जी सहवर्ती मुनि हिमकुमार जी, मुनि लक्षकुमार जी के सान्निध्य में मुकेश भाई पटेल आवासी मिलिट्री स्कूल में आयोजित हुआ।

शिविर में खानदेश मराठवाड़ा के २४ क्षेत्रों से ७२ बालकों ने सहभागिता दर्ज की। उद्घाटन सत्र में खानदेश सभा अध्यक्ष इंदरचंद कांकरिया, मंत्री स्वरूपचंद गोगड़ सहित पदाधिकारीगण, महासभा के आंचलिक प्रभारी सूरजमल सूर्या, अनिल सांखला, कार्यकारिणी सदस्य ऋषभ गेलड़ा, प्रवक्ता उपासक सुधांशु चंडालिया, शिरपुर सभा के अध्यक्ष सहित गणमान्यजन उपस्थित थे।

मुनि आलोक कुमार जी, सहवर्ती मुनि हिमकुमार जी, मुनि लक्षकुमार जी के साथ-साथ मुख्य प्रशिक्षक के रूप में वाशी से समागत प्रवक्ता उपासक सुधांशु चंडालिया ने प्रशिक्षण दिया।

महासभा के तत्त्वावधान में खानदेश सभा द्वारा आयोजित इस शिविर में शिरपुर नगरी के विधायक अमरीश भाई पटेल ने मिलिट्री स्कूल की आवास व्यवस्था एवं शिविरार्थियों के भोजन व्यवस्था उपलब्ध करवाकर शिविर को रोमांचक व यादगार बनाने में सहयोग प्रदान किया। इसमें मुख्य भूमिका राजेश मुणोत ने निभाई।

खानदेश सभा द्वारा नियुक्त शिरपुर के कल्पेश गेलड़ा व संदीप पगारिया ने स्थानीय संयोजक तथा पंकज छाजेड़, भुसावल, देवेंद्र निमानी भुसावल, उमा सांखला जलगाँव ने सह-संयोजकीय दायित्व निभाया।

शिरपुर तेयुप अध्यक्ष महेंद्र भंडारी व दिनेश गेलड़ा चंद्रशेखर गेलड़ा, हेमंत गेलड़ा, गणेश गेलड़ा, तेजस गेलड़ा, रोशन गेलड़ा, उमेश सुराना, मयूर बाफना, पलाश भंडारी तथा शाहदा से सभा अध्यक्ष कैलाश संचेती, कल्पेश गेलड़ा ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

श्रेष्ठ शिविरार्थी के रूप में नमन दिनेश गेलड़ा, शिरपुर एवं अक्षद सचिन छाजेड़, मुक्ताईनगर, विशिष्ट शिविरार्थी के रूप में अर्हम् पंकज छाजेड़ भुसावल एवं वेदांत चेतन सेठिया जालना तथा संस्कारी बालक के रूप में देव उत्सव कुमार कोटेचा, औरंगाबाद को सम्मानित किया गया।

शिविरकाल में आयोजित प्रतियोगिताओं में युग सुराना, समकित चोरड़िया, लवेश कांकरिया, जैनम पगारिया, वीरम संचेती, नीरज सुराणा, मित् चोरड़िया, दर्शन चोरड़िया, मनन सुराणा, आयुष गेलड़ा, देव कोटेचा विजता रहे। उन्हें खानदेश सभा द्वारा प्रोत्साहित किया गया।

महासभा द्वारा केंद्रीय संयोजकीय दायित्व मराठवाड़ा विदर्भ आंचलिक प्रभारी अनिल सांखला ने किया।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

भुवनेश्वर।

मुनि डॉ० ज्ञानेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में मुनि जिनेश कुमार जी के १०८ दिवसीय प्रवास की संपन्नता पर मंगलभावना समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन में तेरापंथी सभा द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुनि डॉ० ज्ञानेंद्र कुमार जी ने कहा कि मुनि जिनेश कुमारजी का मंगलभावना कार्यक्रम रखा गया है। उनका चतुर्मास कटक घोषित है। हम स्वयं उन्हें कटक पहुँचाने जाने वाले हैं। उन्होंने खुद पुरुषार्थ से बहुत कुछ अर्जित किया है।

मुनि मोहनलाल जी स्वामी से संस्कार, सार-संभाल, कार्य करने की शैली ग्रहण की है। मैं उनके स्वस्थ रहते हुए चतुर्मास मंगलकारी बने, ऐसी मंगलकामना करता हूँ। मुनिश्री ने संत त्रय के प्रति मंगलभाव व्यक्त किया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि साधुओं के विहार को प्रशस्त माना गया है। भुवनेश्वर में १०८ दिन का प्रवास बहुत ही शासन प्रभावना वाला रहा। अनेक प्रभावक कार्यक्रम आयोजित हुए। भुवनेश्वर वासियों को चतुर्मास का भरपूर लाभ उठाना है। सभी से खमतखामणा करते हुए मंगलकामना व्यक्त करता हूँ।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी, मुनि विमलेश कुमार जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बच्छराज बेताला, तेयुप अध्यक्ष विवेक बेताला, तेमम अध्यक्षा मधु गीड़िया, लक्षा-भव्या पुगलिया, दिव्यांक गोलछा, ऋषभ बेताला, मुन्नी देवी बेताला, सपना बैद, ललिता सुराणा, तेयुप सदस्य, अंजलि मालू, जितेंद्र बैद, महिला मंडल सदस्याओं आदि ने गीत व वक्तव्य के माध्यम से मंगलभावनाएँ प्रकट की। कार्यक्रम का संचालन वीरेंद्र बेताला ने किया। इस अवसर पर मुनि पदम कुमार जी, मुनि कुणाल जी एवं श्रद्धालुगण अच्छी संख्या में उपस्थित थे।

✦ *दया का भाव आदमी को हिंसा से बचाने वाला और परोपकार में प्रवृत्त करने वाला हो सकता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी के जन्मोत्सव, पटोत्सव एवं दीक्षा दिवस के आयोजन

जीन्द

तेरापंथ सभा भवन, जीन्द में तेयुप के तत्त्वावधान में आचार्यश्री महाश्रमण जी का १३वाँ पदाभिषेक समारोह गौरव जैन तेयुप, जीन्द की अध्यक्षता में मनाया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण संजय जैन ने महावीर अष्टकम् से किया। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा उपासिका कांता मित्तल ने मुनि मुदित से युग प्रधान आचार्य बनने तक की जीवन यात्रा के बारे में बताया।

कन्या मंडल संयोजिका प्रेक्षा जैन ने कविता के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की। डॉ० सुरेश जैन, डॉ० अनिल जैन, नरेश जैन, राजकिशन जैन, श्रीचंद जैन, सभा मंत्री मास्टर नारायण सिंह रोहिल्ला, सभा अध्यक्ष खजांची लाल जैन आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। तेयुप, जीन्द अध्यक्ष गौरव जैन ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संयोजन जीन्द तेयुप मंत्री कुणाल मित्तल ने किया।

● आचार्यश्री महाश्रमण जी के ४९वें दीक्षा दिवस पर अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा महाश्रमणोस्तु मंगलम् के अंतर्गत भक्ति संध्या का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। तेयुप अध्यक्ष सहित स्थानीय श्रावकों द्वारा कार्यक्रम में भाग लिया गया।

तेयुप मंत्री कुणाल मित्तल द्वारा उपस्थित श्रावकों को नव नियुक्त साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया और वंदना अर्पण की।

इस अवसर पर भिक्षु भजन मंडली, जीन्द के संयोजक राजेश जैन, सह-संयोजक संदीप जैन, ज्ञानशाला संयोजिका बिंदु गोयल, विमल जैन, कुणाल मित्तल आदि ने आचार्यश्री महाश्रमण जी पर सुंदर भजनों की प्रस्तुति दी। तेयुप के अध्यक्ष गौरव जैन ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री कुणाल मित्तल ने किया।

हिरियूर

तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी के ४९वें दीक्षा दिवस को युवा दिवस के रूप में मनाया गया। इसके अंतर्गत महाश्रमणोस्तु मंगलम् के रूप में मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चारण से हुआ। तत्पश्चात 'ॐ ह्रीं श्रीं महाश्रमण गुरवे नमः' का जप किया गया। महिला मंडल, हिरियुर द्वारा महाश्रमण अष्टकम् से मंगलाचरण किया। तेयुप अध्यक्ष नरेश तातेड़ ने स्वागत वक्तव्य दिया।

मुनि रश्मि कुमार जी ने कहा कि ११ साल की उम्र में मोहन मुदित आचार्यश्री महाश्रमण जी ने धर्मसंघ में एक कीर्तिमान स्थापित किया। हम सौभाग्यशाली है कि प्रारंभ से आज तक गौरवशाली आचार्यों का नेतृत्व मिलता रहा।

मुनि प्रियांशु कुमार जी ने कहानी के माध्यम से श्रद्धा, समर्पण की प्रेरणा दी। तेरापंथ सभा, विजयनगर के अध्यक्ष राजेश चावत ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। मुनि रश्मि कुमार जी लगभग ३००० किलोमीटर चलकर इस चातुर्मास के लिए आए हैं, यह सबसे बड़ा पदयात्रा है। इस अवसर पर महासभा सदस्य रमेश चौपड़ा, यूकेटीएस अध्यक्ष जयंतीलाल चौपड़ा, सभाध्यक्ष दीपचंद चौपड़ा, धनराज तातेड़, अभातेयुप से तेजराज चौपड़ा, विजयनगर तेयुप अध्यक्ष अमित दक, महिला मंडल अध्यक्षा प्रेम भंसाली, सुमित्रा बरड़िया, महिला मंडल, मुनि प्रियांशु कुमार जी के संसारपक्षीय माताजी कांताजी नौलखा आदि द्वारा वक्तव्य, गीतिका के माध्यम से युवा दिवस पर प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर हिरियुर श्रावक समाज के साथ-साथ विजयनगर, चित्रदुर्ग, होसपेट, होसदुर्ग, तुमकुर आदि क्षेत्रों से श्रावकगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन देवराज चौपड़ा ने किया।

पीलीबंगा

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी के ४९वें दीक्षा दिवस को युवा दिवस के रूप में मनाया गया। इसके अंतर्गत महाश्रमणोस्तु मंगलम् भव्य भक्ति संध्या का आयोजन भगवान महावीर पार्क में किया गया।

तेयुप मंत्री सतीश पुगलिया ने बताया कि हमारी शाखा परिषद द्वारा महाश्रमणोस्तु मंगलम् कार्यक्रम एवं भव्य भक्ति संध्या का मुख्य आकर्षण रहे तेरापंथ समाज की सुप्रसिद्ध गायिका प्रीति डागलिया ने संघीय गीतों के माध्यम से समा बाँधा।

सरदारपुरा

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी का ४९वें दीक्षा दिवस को युवा दिवस के रूप में मनाया। तेयुप भजन मंडली सरदारपुरा द्वारा महाश्रमणोस्तु मंगलम् भव्य भजन संध्या का आयोजन किया गया।

तेयुप अध्यक्ष महावीर चौधरी ने बताया कि तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा दिवस को तेरापंथ समाज प्रति वर्ष युवा दिवस के रूप में मनाता है। तेयुप मंत्री कैलाश तातेड़ ने बताया कि कार्यक्रम के अंतर्गत निबंध लेखन प्रतियोगिता, कविता लेखन प्रतियोगिता कराई।

साध्वी सत्यवती जी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में महावीर चौधरी, कैलाश तातेड़, जितेंद्र गोगड़, विकास चोपड़ा, सतीश बाफना, रूपचंद भंसाली, पूर्णिमा नाहर व अन्य गरिमामय उपस्थिति रही।

पार्श्वनाथ सिटी सोसायटी : साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में आयोजित इस कार्यक्रम में गुलाब डागा, कनकमल डागा, सुभाष बांठिया, कमल दुगड़, हीरालाल सेठिया, पंकज डागा, अक्षय दुगड़, मनीष नाहटा व अन्य उपस्थित रहे।

इसके साथ तेरापंथ किशोर मंडल, सरदारपुरा द्वारा उपवास कर युवा दिवस मनाया। यह उपवास पूरे भारत के किशोर मंडल द्वारा गुरुदेव के चरणों में अर्पित किया गया।

साउथ हावड़ा

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी का ४९वें दीक्षा दिवस को युवा दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हआ।

तेयुप अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने बताया कि आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा दिवस को तेरापंथ समाज द्वारा प्रति वर्ष युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। परिषद के प्रबुद्ध विचारक अशोक कोठारी ने अपनी भावना व्यक्त की। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष एवं परिषद के प्रबुद्ध विचारक सुशील गीड़िया, उपाध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना ने अपनी भावांजलि रखी।

अणुविभा के मीडिया प्रभारी पंकज दुधेड़िया, निवर्तमान अध्यक्ष पवन बैंगाणी, महिला मंडल खुशबू दुगड़, शशि नाहर, जयश्री सुराणा, परिषद के ने अपनी भावना व्यक्त की। प्रबुद्ध विचारक संजय नाहटा, संस्थापक अध्यक्ष राजेश दुगड़ की उपस्थिति रही। श्राविका समाज से विक्टोरिया बैद ने अपने भाव व्यक्त किए।

महाश्रमणोस्तु के अंतर्गत प्रेरणा पाथेय का कार्यक्रम साउथ कोलकाता में विराजित साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में कोलकाता हावड़ा की सभी परिषदों का संयुक्त रूप से आयोजित हुआ, जिसमें परिषद के युवकों द्वारा गीतिका प्रस्तुत की। परिषद के मंत्री गगनदीप बैद ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

● आचार्यश्री महाश्रमण जी के ४९वें दीक्षा दिवस के अवसर पर साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में तेयुप द्वारा ४९ नेत्रदान संकल्प पत्र युवाओं और श्रावकों द्वारा संकल्पित करवाकर अभातेयुप के राष्ट्रीय नेत्रदान सह-प्रभारी सुनील दुगड़, शाखा प्रभारी नरेंद्र छाजेड़ सहित उपस्थित सभी अभातेयुप साथियों को भेंट दिया गया।

इस अवसर पर तेयुप के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने साध्वीश्री जी को वंदना कर संकल्प पत्र के विषय में अवगत कराया। निवर्तमान अध्यक्ष पवन बैंगानी, उपाध्यक्ष ज्ञानमल लोढ़ा, मंत्री गगनदीप बैद, संगठन मंत्री सुमित बैद, कोषाध्यक्ष विजयराज पगारिया, नेत्रदान के संयोजक संदीप नाहर की उपस्थिति रही।

हैदराबाद

हैदराबाद के शिवरामपल्ली क्षेत्र में लक्ष्मीपत कुंडलिया के निवास स्थान पर आचार्यश्री महाश्रमण जी का दीक्षा दिवस युवा दिवस के रूप में मनाया गया। राजेंद्र बोथरा ने बताया कि कार्यक्रम का आगाज शिवरामपल्ली की ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने महाश्रमण अष्टकम् से किया। महिला मंडल की बहनों ने गीतिका की प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेश सुराणा ने अपने भाव सुमन समर्पित किए।

तेयुप के उपाध्यक्ष विनोद दुगड़ ने सभी का स्वागत करते हुए शुभकानाएँ प्रेषित की। महिला मंडल की अध्यक्ष अनीता गीड़िया ने तथा महासभा के प्रभारी लक्ष्मीपत बैद, अणुव्रत समिति की ओर से रीटा सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किए। शिवरामपल्ली के ज्ञानशाला के बच्चों की प्रस्तुति हुई।

साध्वी रश्मिप्रभाजी की गीतिका ने पूरे परिसर में समा बांध दिया। साध्वी संप्रतिप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि गुरु हमारे जीवन निर्माता हैं, भाग्य विधाता हैं, माँ बालक को जन्म देती है, गुरु उसकी आध्यात्मिक चेतना को जगा जीवन जीने की कला सिखाते हैं।

कार्यक्रम में नवनियुक्त साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी के प्रति सभा, तेयुप, महिला मंडल ने शुभकामनाएँ प्रेषित की। तेयुप ने होम्योपैथिक चिकित्सालय के अर्थ सौजन्य प्रदान करने वाले हेमराज दुगड़ का स्वागत किया तथा लक्ष्मीपत कुंडलिया का भी स्वागत किया। तेयुप के मंत्री विरेंद्र घोषल ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कल्पयशा जी ने किया।

जयपुर

आचार्यश्री महाश्रमण जी के ४९वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में महाश्रमणोस्तु मंगलम् का आयोजन शासनश्री साध्वी धनश्री जी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा अणुविभा जयपुर केंद्र में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ शासनश्री साध्वी धनश्रीजी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। मंगलाचरण के क्रम में सौरभ जैन ने महाश्रमण अष्टकम् का संगान किया। तेयुप, जयपुर के अध्यक्ष राजेश छाजेड़ ने स्वागत वक्तव्य से अपने उद्गार व्यक्त किए। साध्वी विदितप्रभा जी ने कविता के माध्यम से गुरुदेव के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। डॉ० दिनेश दुगड़ की सुपुत्री हर्षिता दुगड़ ने गीतिका प्रस्तुत की।

तेरापंथी सभा, जयपुर के अध्यक्ष नरेश मेहता ने अपने विचार व्यक्त किए। मंत्री सुरेंद्र नाहटा ने शासनश्री साध्वी धनश्री जी एवं सहवर्ती अन्य चारित्रात्माओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए समागत धार्मिक परिवार के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी शीलयशा जी ने किया। कार्यक्रम की संयोजना में संयोजक कपिल कोठारी व रोहित बोथरा का श्रम उल्लेखनीय रहा।

सरदारपुरा

साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण जी का युगप्रधान अलंकरण, दीक्षा दिवस, साध्वीप्रमुखा वर्धापना समारोह आदि कार्यक्रम पार्श्वनाथ कॉलोनी में सोत्साह आयोजन किए गए। मंगलाचरण गाकर कार्यक्रम शुरू किया गया। रीतिका रांका, शैली बोथरा, राधिका डागा, आकांक्षा डागा, संगीता सुराणा व कमल दुगड़ ने अपने भाव व्यक्त किए।

ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा चित्र के द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी की अभ्यर्थना की। महिला मंडल ने गीतिका का संगान किया। साध्वी जिनबाला जी ने आचार्यश्री महाश्रमण जी के जीवन पर प्रकाश डाला। साध्वी करुणाप्रभाजी ने आचार्यप्रवर के दीक्षा संबंधी प्रसंगों को प्रस्तुत किया। साध्वी महकप्रभाजी ने गीतिका का संगान किया।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी भव्यप्रभाजी ने किया। मुख्य अतिथि डॉ० विकास राजपुरोहित (मथुरादास हास्पिटल के एच०ओ०डी), जज अनिल आर्या और कनक डागा, कमल दुगड़, गुलाब डागा, सुभाष बांठिया, हीरालाल सेठिया, सूरजमल रांका, मनोज बोथरा, रमेश चावला, बंसीलाल नाहटा, सूरज करण सुराणा आदि ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया। पार्श्वनाथ सिटी के कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम को सुचारु रूप से आयोजित करने में अथक परिश्रम किया।

इस अवसर पर तेयुप के सदस्य पंकज डागा, सुनील डागा, अक्षय दुगड़, मनीष नाहटा आदि उपस्थित रहे।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के जन्मोत्सव, पटोत्सव एवं दीक्षा दिवस के आयोजन

गंगाशहर

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा तेरापंथ के ११वें पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी के ४९वें दीक्षा दिवस को युवा दिवस के रूप में मनाया गया। इसके अंतर्गत महाश्रमणोस्तु मंगलम् का आयोजन किया गया।

तेयुप मंत्री देवेंद्र डागा ने बताया कि परिषद द्वारा महाश्रमणोस्तु मंगलम् कार्यक्रम के अंतर्गत निबंध लेखन प्रतियोगिता, कविता लेखन प्रतियोगिता, प्रेरणा पाथेय के अंतर्गत बच्चों द्वारा लघु नाटिका में भी सहभागिता दर्ज की गई। तेरापंथ समाज की विख्यात गायिका सोनल पिपाड़ा व सहयोगी गायिका दीक्षा पींचा ने संधीय गीतों के माध्यम से समा बांधा। कार्यक्रम में स्थानीय कलाकारों राजेंद्र बोथरा, कोमल एकता पुगलिया, प्रियंका सांड व तेयुप भजन मंडली ने प्रस्तुतियाँ दी।

परिषद के सहमंत्री भरत गोलछा ने बताया कि कार्यक्रम के प्रायोजक सेठ चांदमल पानादेवी दफ्तरी चेरिटेबल ट्रस्ट के जयचंदलाल दफ्तरी का सम्मान जैन महासभा बीकानेर के अध्यक्ष जैन लूणकरण छाजेड़, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी, बसंत नौलखा, तेयुप टीम व महिला मंडल ने किया। सोनल पिपाड़ा का सम्मान तेयुप, तेकिमं व महिला मंडल की टीम ने किया। स्थानीय कलाकारों का सम्मान तेयुप अध्यक्ष-मंत्री ने किया। कार्यक्रम में गंगाशहर, बीकानेर, भीनासर के श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित हुए। कार्यक्रम के पश्चात परिषद के मंत्री देवेंद्र डागा ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

पूर्वांचल-कोलकाता

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी का दीक्षा दिवस मनाया गया। भक्ति संध्या कार्यक्रम की शुरुआत सामुहिक नमस्कार महामंत्र से हुई। परिषद की भजन मंडली पूर्वांचल स्वर लहरी के हेमंत बैद, धीरज मालू, राजीव खटेड़, संजय बरमेचा आदि गायकों ने अपनी अभिवंदना प्रेषित की।

सुप्रसिद्ध गायक देवेंद्र बैंगानी ने अपने भजनों से समा बांध दिया। पूर्वांचल सभा के अध्यक्ष एवं परामर्शक संजय सिंघी, मंत्री प्रवीण पगारिया, सॉल्टलेक सभा के अध्यक्ष एवं परिषद के परामर्शक नागराज बरमेचा, मंत्री विनोद संचेती सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

महाश्रमणोस्तु मंगलम् भव्य भक्ति संध्या कार्यक्रम के प्रायोजक थे प्रमोद, महेंद्र, नरेंद्र छाजेड़ परिवार।

बालोतरा

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी का दीक्षा दिवस युवा दिवस के रूप में मनाया गया। तेयुप मंत्री नवीन सालेचा ने बताया कि रात्रि में आयोजित भक्ति संध्या में दिल्ली से आई शर्मिला बरड़िया और दीपिका छल्लाणी ने सुमधुर गीतों से समा बांध दिया।

कार्यक्रम की शुरुआत शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी द्वारा मंगलपाठ से हुई। सभी साध्वीवृंद ने गीत का संगान कर गुरुदेव को वंदना की

तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। तेयुप स्वर संगम द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। बालोतरा से शेफाली चोपड़ा, गमनलता ओस्तवाल और राहुल जीरावला ने प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री नवीन सालेचा द्वारा किया गया। इस अवसर पर ओसवाल समाज अध्यक्ष शांतिलाल डागा, सीइपीटी अध्यक्ष रूपचंद सालेचा, तेरापंथ सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संकलेचा, मंत्री संगीता बोथरा, शिक्षा समिति अध्यक्ष सुभाष मेहता, अभातेयुप सदस्य तरुण भंसाली और मनोज ओस्तवाल, अशोक लोढ़ा, संदीप लोढ़ा और मनीष लोढ़ा उपस्थित रहे।

● अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, बालोतरा द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी के ४९वें दीक्षा दिवस को युवा दिवस के रूप में मनाया। इसके अंतर्गत महाश्रमणोस्तु मंगलम् में प्रेरणा पाथेय कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

तेयुप मंत्री नवीन सालेचा ने सभी का स्वागत किया। मुख्य अतिथि ओमप्रकाश बांठिया ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी का पुरुषार्थ प्रबल है, वे कर्मयोगी हैं, उन्होंने असंभव कार्यों को भी संभव सिद्ध कर दिया और जिनशासन की खूब प्रभावना की।

इस अवसर पर शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी को श्रेष्ठ पुरुष की जितनी भी उपमाएँ दी जाएँ वो कम है। इस अवसर पर साध्वी प्रमोदश्री जी, साध्वी उर्मिला कुमारी जी, साध्वी ध्यानप्रभाजी, साध्वी आदर्शप्रभाजी और साध्वी ऋतुप्रभाजी ने अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम की शुरुआत कन्या मंडल द्वारा महाश्रमण अष्टकम् से की। ज्ञानशाला विद्यार्थी मोहजीत सालेचा और मोक्ष संकलेचा ने नाट्य की प्रस्तुति दी।

मुमुक्षु तुलसी, मुमुक्षु मनीषा, महिला मंडल और तेयुप ने अपने सुमधुर गायकी से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संकलेचा, अभातेयुप सदस्य मनोज ओस्तवाल, सारिका बागरेचा, ममता गोलेच्छा, मान्या सालेचा ने वक्तव्य के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी यशस्वीप्रभाजी ने किया। इस अवसर पर तेरापंथ समाज के गणमान्य जन उपस्थित थे।

नार्थ टाउन, चेन्नई

मुनि सुधाकरजी के सान्निध्य में जैन संघ भवन में आचार्य महाश्रमण जी का पदाभिषेक अभिवंदना समारोह एवं युवा दिवस - महाश्रमणोस्तु मंगलम् कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने कहा कि जीवन के सर्वोच्च शिखर पर आरोहण करने, महान बनने के लिए गुरु बहुत जरूरी है। जो निर्मल, पवित्र, विद्वता, सहजता, सरलता के धनी होते हैं, वे सुगुरु हमें सद्गति की ओर ले जा सकते हैं। मोक्षधाम पहुँचा सकते हैं।

अपने सुगुरु आचार्यश्री महाश्रमण जी को युगप्रधान पदाभिषेक अलंकरण की अभिवंदना करते हुए मुनिश्री ने कहा कि कई व्यक्ति अलंकरण से अलंकृत होते हैं, तो कभी-कभी विशिष्ट महापुरुषों से अलंकरण स्वयं अलंकृत हो जाता है। आचार्य महाश्रमण जी को प्राप्त युगप्रधान अलंकरण स्वयं सम्मानित हो रहा है।

मुनि नरेश कुमार जी ने आराध्य की आराधना गीत के माध्यम से की। उपासक श्रेणी, महिला मंडल, कन्या मंडल, नार्थ टाउन श्रावक समाज एवं हेमंत डूंगरवाल ने मधुर संगीत और तेरापंथ सभा अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष ललित आंचलिया, तेयुप अध्यक्ष मुकेश नवलखा, मुकेश रांका ने वक्तव्य, कविता के माध्यम से भावांजलि से अभ्यर्थना की।

नार्थ टाउन तेरापंथ परिवार के अध्यक्ष संपतराज सेठिया ने स्वागत स्वर एवं राजकरण बैद ने आभार व्यक्त किया। समारोह का संचालन मंत्री पुखराज पारख ने किया।

जयपुर

आचार्यश्री महाश्रमण जी के ४९वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में महाश्रमणोस्तु मंगलम् का आयोजन मुनि सुमति कुमार जी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा भिक्षु साधना केंद्र में किया गया।

मुनिश्री ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें पट्टधर युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मात्र १२ वर्ष की अल्पायु में सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण कर अपना जीवन अध्यात्म को समर्पित कर दिया। आज संपूर्ण समाज गुरुदेव के दीक्षा दिवस को युवा दिवस के रूप में मनाकर आनंदित महसूस कर रहा हैं

परिषद के अध्यक्ष राजेश छाजेड़ ने सभी का स्वागत किया तथा अपने विचार व्यक्त किए।

महाश्रमणोस्तु मंगलम् भव्य भक्ति संध्या के क्रम में संगायक राजेश धाड़ेवा, प्रदीप बाफना, संगायिका सुधा दुगड़, निकिता दुगड़, पूर्वा व साक्षी बांठिया ने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप, मोक्ष मार्ग की साधना में संलीन गुरुदेव के नेतृत्व में तेरापंथ धर्मसंघ की प्रभावना जन-जन में बढ़ती रहे एवं हमारे जीवन में आपका आशीर्वाद सदैव बना रहे।

मंत्री सुरेंद्र नाहटा ने मुनि सुमति कुमार जी एवं सहवर्ती अन्य चारित्रात्माओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए समागत धार्मिक परिवार के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम की संयोजना में संयोजक अविनाश छाजेड़ का श्रम उल्लेखनीय रहा।

बारडोली

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी के ४९वें दीक्षा दिवस को युवा दिवस के रूप में मनाया गया। इसके अंतर्गत महाश्रमणोस्तु मंगलम् का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में तेयुप के अध्यक्ष साहिल बाफना, मंत्री रौनक सरणोत एवं बारडोली के गायक संजय बड़ौला के अथक परिश्रम से कार्यक्रम श्रद्धा भक्ति के साथ प्रारंभ हुआ।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, तेमम, कन्या मंडल, किशोर मंडल, अणुव्रत समिति, तेयुप की सहभागिता रही।

सदी के महान वैज्ञानिक थे आचार्य महाप्रज्ञ

बालोतरा।

न्यू तेरापंथ भवन में साध्वी उर्मिला कुमारी जी के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञजी का १३वाँ महाप्रयाण दिवस मनाया गया। तेयुप मंत्री नवीन सालेचा ने बताया कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रज्ञा के धनी थे। आचार्य तुलसी ने स्वयं उन्हें इसी विशेषता के लिए महाप्रज्ञ की उपाधि दी थी। उनका चिंतन अत्यंत गहरा और दूरदर्शी था। साध्वी उर्मिला कुमारी जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी विलक्षण बुद्धि से खूब साहित्य का सृजन किया। प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान के रूप में स्वस्थ जीवन जीने और स्वयं के भीतर देखने की कला सबको दी।

इस अवसर पर साध्वी ज्ञानयशाजी और साध्वी रितुयशा जी ने सुमधुर गीत से भावांजलि अर्पित की। साध्वी मुधुलयशा जी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी के विविध जीवन प्रसंगों का उल्लेख किया।

इस अवसर पर मुमुक्षु बहन राजल खाटेड़, तेरापंथ सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संकलेचा, तेयुप स्वर संगम, महिला मंडल, सारिका बागरेचा, चंपालाल बालड़, गीता छाजेड़ और सोहनलाल वडेरा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा मंत्री महेंद्र बैद ने किया।

तीर्थ स्थापना दिवस का आयोजन

बंगुमुंडा।

भगवान महावीर द्वारा स्थापित तीर्थ स्थापना दिवस मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में मनाया गया। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि प्रभु महावीर को केवलज्ञान हुआ। केवल्यप्राप्ति के तुरंत पश्चात प्रभु देशना प्रदान करते हैं। पहली देशना में तीर्थ की स्थापना नहीं हुई, क्योंकि उस देशना में देवता ही उपस्थित थे।

साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूपी चार तीर्थ की स्थापना कर प्रभु तीर्थंकर कहलाए। पाँच महाव्रत को अंगीकार करने वाले साधु-साध्वी एवं बारह व्रत को धारण करने वाले श्रावक-श्राविका कहलाए। भगवान ने अहिंसा को जीवन-व्रत बनाया।

केशव नारायण जैन, बंगुमुंडा सभाध्यक्ष जयप्रकाश जैन, कांटाभाजी सभाध्यक्ष युवराज जैन ने जैन ध्वजारोहण किया। भगवान महावीर की स्तुति एवं उद्घोष का सामुहिक संगान हुआ। बंगुमुंडा, कांटाभाजी, सिंधिकेला श्रावक समाज उपस्थित था।

✦ *सेवा तब उच्चस्तरीय हो सकेगी, जब व्यापार के साथ नैतिकता जुड़ेगी।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीप्रमुखा अभिवंदना समारोह का आयोजन

गांधीनगर।

तेरापंथ सभा भवन में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा, बैंगलोर के तत्त्वावधान में नव मनोनीत साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी का अभिवंदना समारोह आयोजित किया गया। साध्वीवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के पश्चात तेरापंथ महिला मंडल द्वारा अष्टकम् संगान से मंगलाचरण किया गया।

साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा कि युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपने ४९वें दीक्षा दिवस के मंगलमय क्षणों में साध्वी विश्रुतविभाजी को साध्वीप्रमुखा पद पर मनोनीत किया, जिसे सुनकर पूरे धर्मसंघ में उल्लास छा गया यह तेरापंथ धर्मसंघ का गौरव है जहाँ किसी का कोई तर्क नहीं। साध्वी विश्रुतविभाजी नवम साध्वीप्रमुखा हैं।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने कहा कि संयम, वैराग्य और अनुशासन की प्रतीक साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी हमारे धर्मसंघ की बहुत बड़ी उपलब्धि है। पूरा धर्मसंघ महाश्रमण जी के इस मोहनीय निर्णय पर कृतज्ञ है। शासनमाता की कृपा से ही तराशा हुआ हीरा संघ को प्राप्त हुआ है।

साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी व साध्वी चेलनाश्री जी ने आपके महनीय जीवन प्रसंगों पर भावनाएँ व्यक्त की तथा साध्वीवृंद की अभिवंदना में सामुहिक गीत का संगान किया। तेरापंथ सभा, बैंगलोर के अध्यक्ष सुरेश दक, महासभा से प्रकाश लोढ़ा, तेयुप अध्यक्ष विनय बैद, अणुविभा से ललित बाबेल, तेमम से निर्मला, तेरापंथ सरस ट्रस्ट उपाध्यक्ष सभी वक्ताओं ने साध्वीप्रमुखाश्री जी की अभिवंदना की।

आभार ज्ञापन सज्जनराज पितलिया ने किया। संचालन तेमम मंत्री सरस्वती बाफना ने किया।

साध्वीप्रमुखा वर्धापना समारोह का आयोजन

ट्रिप्लीकेन, चेन्नई।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ ट्रस्ट, ट्रिप्लीकेन के तत्त्वावधान में नवनियुक्त साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के वर्धापना समारोह का तेरापंथ सभा भवन में आयोजन किया गया। साध्वीप्रमुखा प्रणौमि भावना से साध्वीवृंद के मंगलाचरण द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में पुण्यपुंज आचार्य पद पर पटासीन आचार्य पुण्यशाली होते हैं। साध्वीप्रमुखा का पद भी संघ में तेजस्वी होता है। शासनमाता के दीर्घकालीन सान्निध्य में अनुभवों से आप्लावित साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी हमें धर्मसंघ को मिली।

साध्वीश्री जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखाजी का जीवन प्रारंभ से ही निर्लिप्त रहा है। उनका वर्चस्व भी बेजोड़ रहा है। आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रदत्त समण दीक्षा की प्रथम पंक्ति में मुमुक्षु सविता से समणी स्मितप्रज्ञा बनी। साध्वी दीक्षा से संयम पर्याय में विश्रुतविभा स्वनाम धन्य बन गया। तीन आचार्यों की असीम कृपा से वे सदैव गतिमान रही।

साध्वी सिद्धियशाजी, साध्वी डॉ० राजुलप्रभाजी, साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभाजी ने साध्वीप्रमुखा के सान्निध्य में बिताए सुखद अतीत के अनुभवों की प्रस्तुति देते हुए शुभ भविष्य की मंगलकामना की। मुमुक्षु कोमल, तेरापंथ सभा अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, तेयुप अध्यक्ष मुकेश नवलखा, टीपीएफ अध्यक्ष राकेश खटेड़, महिला मंडल अध्यक्ष पुष्पा हिरण, अभातेममं सदस्या माला कातरेला, अभातेयुप कोषाध्यक्ष भरत मरलेचा, उपासक स्वरूपचंद दांती, अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष मंजु गेलड़ा, तेरापंथ ट्रस्ट ट्रिप्लीकेन अध्यक्ष सुरेश संचेती, गौतमचंद जे० सेठिया, तेममं मंत्री रीमा सिंघवी सहित अनेक पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने अभ्यर्थना की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी डॉ० शौर्यप्रभा जी ने किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह का आयोजन

बैंगलुरु।

गांधीनगर तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी के दर्शनार्थ शासनश्री साध्वी शिवमालाजी नेहरू नगर से विहार कर पधारी। साध्वीवृंद का परस्पर आध्यात्मिक मिलन श्रद्धालुजनों के लिए प्रेरक था। भवन में पधारने पर जुलूस सभा के रूप में परिवर्तित हो गया।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने साध्वीवृंद का स्वागत करते हुए कहा कि हम सभी साध्वियाँ काफी दिनों से आपके पधारने का इंतजार कर रहे थे। साध्वी शिवमाला जी श्रमशील साध्वी हैं। सभी साध्वियाँ धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना कर रही हैं। साध्वी मंजुरेखाजी, साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी व साध्वी चेलनाश्री जी ने सुमधुर स्वर में सभागत साध्वीवृंद का स्वागत किया।

शासनश्री साध्वी शिवमालाजी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी हमारे धर्मसंघ की वरिष्ठ साध्वियों में हैं एवं शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी भी अपनी विशिष्ट योग्यता में बहुत श्रम करके धर्मसंघ का गौरव बढ़ा रही है। आप सभी से मिलने की हमारी भावना आज सफल हुई है। साध्वी अमितरेखाजी, साध्वी अर्हमप्रभाजी एवं साध्वी रत्नप्रभाजी ने साध्वीश्री जी के दर्शन कर प्रसन्नता की भावाभिव्यक्ति गीत के संगान से की।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ का गौरव है विनय एवं वात्सल्य। हमारी छोटी बहन साध्वी शिवमाला जी से बहुत दिनों के बाद आज मिलन हो रहा है। साध्वी शिवमाला जी भी धर्मसंघ की प्रभावना में अच्छा श्रम कर रही हैं। इस वर्ष आपका चौमासा राजराजेश्वरीनगर के लिए आचार्यप्रवर ने फरमाया है। हम वहाँ चातुर्मास करके आए हैं। आप सभी साध्वियाँ संयम, तप, त्याग की सभी को प्रेरणा देना।

साध्वीवृंद के स्वागत में गांधीनगर सभा अध्यक्ष सुरेश दक, तेयुप अध्यक्ष विनय बैद, तेममं अध्यक्षा स्वर्णमाला पोकरना, मंत्री सरस्वती बाफना, अणुविभा संगठन मंत्री कन्हैयालाल चिप्पड़, ज्ञानशाला वरिष्ठ संयोजक जुगराज श्रीश्रीमाल, तेयुप मंत्री प्रवीण बोहरा ने विचार रखे।

परिषद द्वारा गदग द्वारा सभा के पूर्व अध्यक्ष, कांतिलाल भंसाली का सम्मान किया गया। संचालन ज्ञानशाला सह-संयोजक गौतम डोसल ने किया। इस अवसर पर परिषद सहमंत्री प्रदीप चौपड़ा, युवा वाहिनी संयोजक भरत रायसोनी, सज्जनराज पितलिया व अनिल डूंगरवाल की विशेष उपस्थिति रही।

✦ *मनुष्य योनि को महत्त्वपूर्ण माना गया है, क्योंकि इसी जन्म से सिद्धत्व को प्राप्त किया जा सकता है। देवता भी मनुष्य गति में आए बिना मुक्ति को प्राप्त नहीं हो सकते।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्रीजी के प्रति

● **शासनश्री साध्वी मंजुप्रभा** ●

हे जी हां सा शासनमाता री यादां म्हांने आवै सा,
नयणां रा अश्रु रुक नहीं पावै सा---नयणां---

हे जी हां सा देवी स्वरूपा धरती पर थे उतरया सा,
चंदेरी गौरव घणो चमकायो सा---।।

हे जी हां सा गण री गरिमा ने शिखरां चढ़ाई सा,
तीनूं गुरुवाँ री सेवा थे साझी सा---।।

हे जी हां सा थारै नयणां रो नेहडलो अमोलो सा,
आकर्षण फोटूलाखां दिलां में सा---।।

हे जी हां सा वाणी इमरत सी, हाथ रो जिकारो सा,
मनगमती सूरत मनहारी प्यारी सा---।।

हे जी हां सा जीवन अप्रमत्त, निरभिमानी सा,
विलक्षण जोड़ी दूजी न पावां सा---।।

हे जी हां सा संपादन सृजनात्मक शैली अलबेली सा,
इतिहास बण्यो है इचरचकारी सा---।।

हे जी हां सा साध्वी गण री थे ख्यात बढ़ाई सा,
ऊँचाई गण में खूब दिराई सा---।।

हे जी हां सा थे तो गुरुवां री कीरपा भारी पाई सा,
गुरु दर्शन देवण दौड़ लगाई सा।
वंदन विधि देख्यां हीयो हरसावै सा---।।

हे जी हां सा थांरी प्रणति में पांचू अंग नमावां सा,
श्रद्धा सुमन री भेंट चढ़ावां सा।
स्वर्गां में म्हांने निजरां में रखज्यो सा---।।

लय : है जी हां सा म्हांरी---

नवमनोनीत साध्वीप्रमुखाश्री जी विश्रुतविभा जी के प्रति

अभिनंदन के स्वर

● **साध्वी ललिताश्री** ●

भिक्षु शासन नंदनवन का खिलता है यह उपवन।
साध्वीप्रमुखा का करते हम भाव भरा अभिनंदन।
गुरु दृष्टि का कर आराधन पाई तुमने नई रोशनी।
बौद्धिक युग में बौद्धिक प्रमुखा से खिल रहा है गुलशन।।

सहज सरलता सहनशीलता देखी हमने बड़ी निराली।
किन शब्दों में करूँ बयान आपका सब दिल खुशियाली।
गुरुत्रय के प्रति पूर्ण समर्पित महाप्रज्ञ से ऊर्जा पाई।
तप-जप की शुद्ध साधना से बदली जीवनशैली।।

विश्व पर्यावरण दिवस

सिलीगुड़ी।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर अणुव्रत समिति ने महावीर इंटरनेशनल, सिलीगुड़ी के द्वारा संचालित अपना घर में फलों के अनेक पौधे लगाए। इससे पहले विगत में अणुव्रत समिति, सिलीगुड़ी ने महावीर इंटरनेशनल के साथ मिलकर एक विशाल पौधारोपण कार्यक्रम में लगभग ७००० पौधे लगाए थे। अणुव्रत समिति की अध्यक्षा पुष्पा चिंडालिया एवं मंत्री जुली सिरोहिण सहित सभी कार्यकर्ताओं को साधुवाद एवं मंगलकामना।

डॉ० मनमोहन सिंह अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित

अणुव्रत जैसे मानवतावादी आंदोलन की आज अहम आवश्यकता

दिल्ली।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह को अणुव्रत विश्व भारती द्वारा अणुव्रत पुरस्कार प्रदान किया गया। ९० वर्षीय डॉ० सिंह ने पुरस्कार स्वीकार करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी ने जिस उद्देश्य से सन् १९४९ में अणुव्रत आंदोलन की शुरुआत की थी वह आज और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है। इन्हीं मूल्यों से देश का समग्र विकास संभव है। डॉ० सिंह ने कहा कि मैं अणुव्रत दर्शन से सदैव प्रभावित रहा हूँ और इससे जुड़ने के प्रति रुचिशील रहा हूँ। आज इस पुरस्कार के रूप में मुझे अणुव्रत आंदोलन से जुड़ने का मौका मिला है, इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ। डॉ० सिंह ने आचार्य महाश्रमण द्वारा दुनिया में मानवीय मूल्यों के उत्थान के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए उन्हें महान संत बताया और अपनी अभ्यर्थना व्यक्त की। उन्होंने आगे कहा कि मुझे अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, लेकिन अणुव्रत जैसे मानवतावादी आंदोलन द्वारा दिया गया यह सम्मान मेरे लिए विशेष महत्त्व रखता है।

इस अवसर पर डॉ० मनमोहन सिंह की धर्मपत्नी गुरशरण कौर भी मौजूद थीं। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अनेक बुराइयों के बीच दुनिया में आज भी अच्छाई मौजूद है, जिसका श्रेय संत, महात्मा और मानवतावादी प्रयासों को जाता है, जिनमें अणुव्रत आंदोलन का विशेष स्थान है। उन्होंने कहा कि आज का दिन हमारे लिए विशेष महत्त्व का दिन है कि हमें आचार्य महाश्रमण जी का आशीर्वाद मिला है। यह ईश्वर की कृपा से संभव हुआ है।

डॉ० मनमोहन सिंह के निवास पर आयोजित अनौपचारिक कार्यक्रम में अणुविभा अध्यक्ष संचय जैन, ट्रस्टी तेजकरण सुराणा एवं महामंत्री भीखम सुराणा उपस्थित थे। इस अवसर पर संचय जैन ने कहा कि आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन संयम, सादगी और प्रामाणिकता को प्रतिष्ठापित करने वाला आंदोलन है और डॉ० मनमोहन सिंह का जीवन इन मूल्यों का उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने इस अवसर पर प्राप्त अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी का मंगल संदेश पढ़कर सुनाया। आचार्यश्री ने डॉ० मनमोहन सिंह के प्रति मंगलकामना व्यक्त करते हुए कहा कि वे खूब चित्त समाधि में रहते हुए नैतिक मूल्यों के प्रसार में अपनी शक्ति का नियोजन करते रहें।

ट्रस्टी तेजकरण जैन ने अणुव्रत व अणुव्रत पुरस्कार की पृष्ठभूमि बताते हुए कहा कि डॉ० मनमोहन सिंह ने सार्वजनिक जीवन में रहते हुए भी व्यक्तिगत शुचिता और सादगी का उदाहरण प्रस्तुत किया है। महामंत्री भीखम सुराणा ने प्रशस्ति पत्र का वाचन किया और अणुविभा के कार्यक्रमों की जानकारी दी। अणुव्रत पुरस्कार के रूप में डॉ० मनमोहन सिंह को स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पत्र, शॉल, अणुव्रत अंगवस्त्र और एक लाख इक्यावन हजार रुपये का चैक भेंट किया गया।

अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने डॉ० मनमोहन सिंह को अणुविभा की विभिन्न प्रवृत्तियों व प्रकाशनों की जानकारी दी व साहित्य भेंट किया। डॉ० मनमोहन सिंह व गुरशरण कौर ने अत्यंत आत्मीय भाव के साथ अणुव्रत कार्यकर्ताओं के साथ विभिन्न विषयों पर चर्चा की और कहा कि आपको अणुव्रत जैसे श्रेष्ठ विचार को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने का निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए।

दायित्व बोध कार्यशाला एवं शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

कोटा।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में गुमानपुरा स्थित अणुव्रत भवन में दायित्व बोध कार्यशाला एवं तेरापंथी सभा का शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में दिगंबर जैन समाज, ओसवाल जैन समाज, पोरवाल जैन समाज के पदाधिकारी एवं गणमान्य लोग उपस्थित थे।

इस अवसर पर साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आज हर व्यक्ति के भीतर दायित्व बोध की चेतना का जागरण अपेक्षित है, सदियों से दायित्व व हक दो जैसे शब्द चले आ रहे हैं।

साध्वीश्री जी ने नवमनोनीत टीम के कार्यकाल की सफलता के लिए शुभकामना करते हुए कहा कि नवमनोनीत अध्यक्ष संजय बोथरा अपनी पूरी टीम के साथ अपने कार्यकाल को यशस्वी, वर्चस्वी बनाएँ। पदेन व्यक्तियों के आँख में स्नेह का सावन बरसे जीभ में मधुरता रहे और कड़वी बात का भी मीठा जवाब दे। यह कार्यकाल की सफलता के महत्त्वपूर्ण सूत्र हैं।

साध्वी डॉ० सुधाप्रभाजी ने संघीय दायित्व का बोध कराते हुए कहा कि जिस संघ ने पहचान दी है, जिस संघ के कारण हमारा अस्तित्व है, जो हमारे लिए गति प्राण, त्राण, शरण है, उसके विकास को शिखरों तक पहुँचाना हमारा दायित्व होना चाहिए।

साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने कहा कि दायित्व व्यक्ति पीसफुल हो, पॉजिटिव थिंकिंग हो, परपजफुल हो, प्राग्रेसिव विचारों वाला हो। साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी सुधाप्रभाजी, साध्वी समत्वयशाजी व साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने गीत का संगान किया। नवमनोनीत सभा अध्यक्ष संजय बोथरा ने कहा कि पूज्यप्रवर ने महती कृपा करके हमें साध्वी अणिमाश्री जी का चातुर्मास प्रदान किया है, हम साध्वीश्री जी के निर्देशानुसार संघीय कार्यों को करते हुए संघ के गौरव को बढ़ाएँगे।

कार्यक्रम में राजस्थान खादी ग्रामोद्योग के उपाध्यक्ष एवं वर्धमान स्थानकवासी जैन श्री संघ के अध्यक्ष पंकज मेहता, दादाबाड़ी के अध्यक्ष नरेंद्र ओसवाल, ओसवाल समाज के मंत्री महेंद्र कांकरिया, समता भवन के अध्यक्ष हनुमानमल दुगड़, पोरवाल समाज के सुरेशचंद्र जैन, ताराचंद जैन, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष अशोक दुगड़, महिला मंडल मंत्री सुनीता जैन, तेयुप अध्यक्ष आनंद दुगड़, टीपीएफ अध्यक्ष अखिलेश कांठेड़ ने नव मनोनीत टीम को शुभकामनाएँ दी। महिला मंडल ने मंगल संगान के द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री धर्मचंद जैन ने किया।

अध्यक्ष संजय बोथरा, उपाध्यक्ष रवि बुच्चा, गजराज बोथरा, मंत्री धर्मचंद जैन, कोषाध्यक्ष मनोज बोथरा, मंत्री दिलीप बाफना, संगठन मंत्री मनोज जैन एवं कार्यकारिणी सदस्यों को वरिष्ठ श्रावक किशनलाल सेठिया ने पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई। पुखराजमल बाफना एवं किशनलाल सेठिया सभा के संरक्षक के रूप में रहे। जैन समाज के आगंतुक महानुभावों का सभी की ओर से सम्मान किया गया।

तेरापंथी सभा का शपथ ग्रहण समारोह

सिकंदराबाद।

तेरापंथी सभा का शपथ ग्रहण समारोह का शुभारंभ साध्वी त्रिशला कुमारी जी के नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ प्रारंभ हुआ। मंगलाचरण नवीन छाजेड़ एवं अन्य साथियों ने सभागीत द्वारा किया। निवर्तमान अध्यक्ष सुरेश सुराणा का वक्तव्य हुआ एवं निवर्तमान अध्यक्ष ने वर्तमान अध्यक्ष बाबूलाल बैद को शपथ दिलाई। बाबूलाल बैद ने अपने पदाधिकारियों, परामर्शदाताओं एवं कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलाई। तत्पश्चात बाबूलाल बैद ने स्वागत भाषण में पूज्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता एवं केंद्र द्वारा निर्देशित कार्यों को करने की अपनी भावना व्यक्त की।

साध्वीश्री जी द्वारा निर्देशित कार्यों को भी सभा द्वारा करने की भावना व्यक्त की। अध्यक्ष सुराणा एवं उनकी टीम के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

तेयुप के अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा, तेमम अध्यक्षा अनीता गीड़िया, टीपीएफ के मंत्री सुनील पगारिया, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश एच० भंडारी, ज्ञानशाला परिवार की ओर से पूर्व आंचलिक संयोजिका अंजु बैद ने वर्तमान अध्यक्ष बाबूलाल बैद को अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित की।

आनंद जैन भवन के चेयरमैन जीतमल बेताला, जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसाइटी के अध्यक्ष महेंद्र भंडारी, जैन सेवा संघ एवं कई अन्य संस्थाओं से जुड़े हुए अशोक बरमेचा, सभा के पूर्व अध्यक्ष राजकुमार सुराणा ने अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित की। रायपुर से समागत महासभा के छत्तीसगढ़ के क्षेत्रीय प्रभारी विनोद बरलोटा ने भी नवनिर्वाचित अध्यक्ष को शुभकामनाएँ दी।

साध्वी रश्मिप्रभाजी ने गीतिका के माध्यम से अपने भावों को व्यक्त किया। साध्वी कल्पयशाजी का भी वक्तव्य रहा। साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने अपने वक्तव्य में नवगठित टीम के प्रति मंगलकामना करते हुए नया इतिहास रचने की प्रेरणा दी। आभार ज्ञापन मंत्री सुशील संचेती ने किया।

प्रेक्षाध्यान, योग शिविर में दिया स्वस्थ जीवन जीने का प्रशिक्षण

लाडनूं।

अणुव्रत समिति, लाडनूं के तत्त्वावधान में आयोजित १५ दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर के द्वितीय दिवस योगाचार्य डॉ० अशोक भास्कर ने योग का प्रशिक्षण देते हुए रोगमुक्ति के गुर सिखाए। शिविर में प्रशिक्षण के दौरान योगाचार्य डॉ० भास्कर ने बताया कि डायबिटीज, पेट के रोग, चर्मयोग, मनोकायिक बीमारियों के साथ बीपी, हृदयरोग का निवारण प्रेक्षाध्यान योग से किया जा सकता है।

शिविर प्रभारी अंजना शर्मा ने बताया कि शिविर में हर रोज योग-आसन, प्राणायाम, ध्यान कायोत्सर्ग, मुद्रा, ध्वनि, रंग चिकित्सा और लाफिंग थैरेपी से जीवन भर स्वस्थ रहने के गुर सिखाए जा रहे हैं।

इस अवसर पर अध्यक्ष शांतिलाल बैद, उपाध्यक्ष अब्दुल हमीद मोयल, मंत्री डॉ० वीरेंद्र भाटी मंगल, विनोद बोकड़िया, रेणु कोचर, प्रेम बैद सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

मंत्र साधना से होता है विघ्नों का निवारण

ट्रिप्लीकेन, चेन्नई।

तेरापंथ सभा में अनुष्ठानकर्ता श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित करते हुए साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि जिनशासन की नीवों को सशक्त और शक्ति संपन्न बनाने में प्रभावक मंत्रों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही हैं अनेक प्रभावक साधना मंत्रों में विशिष्ट स्थान है पैंसठिया छंद एवं यंत्र का।

प्राचीन आचार्यों के अनुसार पैंसठिया यंत्र सुख एवं सौभाग्य प्रदायक है। अनेक साधक सविधि इसकी साधना करते हैं। वर्द्धमान संख्या के साथ इसका पाठ किया जाता है। यंत्र साधकों को कम से कम ३१ बार इसका उच्चारण करना चाहिए। जप के साथ तप का संयोग विशिष्ट फलदायी बनता है। साध्वीश्री जी ने कहा कि कहीं से भी गुणन करने से संख्या पैंसठ होती है, इसलिए इस छंद को पैंसठिया कहा जाता है। इस छंद की स्तुति प्रतिदिन करनी चाहिए।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 - 26 जून, 2022

✦ *चिंतन से आदमी दुःखी बन सकता है और चिंतन से वह सुखी हो सकता है।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्टिपूर्ति पर

चैतन्य-पथ के यायावर आचार्यश्री महाश्रमण

❐ साध्वी रक्षितयशा ❐

जननी और जन्मभूमि का गौरव फर्श से अर्श तक प्रसिद्ध रहा है। कहा भी है–'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'।

अपार महिमा वैशाख शुक्ला नवमी के उस मंगलमय क्षण की जिस क्षण अखिल मानव जाति का कल्याण करने वाले महामानव का इस रत्न-गर्भा धरती पर अवतरण हुआ।

गौरवमयी है वैशाख शुक्ला दशमी की वह शुभ वेला जिस समय एक छोटा सा बीज विशाल कल्पवृक्ष बन आज चतुर्विध धर्मसंघ को शीतल छाँव प्रदान कर पाप-ताप-संताप को दूर कर रहा है।

धन्य बनी उस कालजयी व्यक्तित्व की पुरुषार्थ प्रसूत अहिंसा यात्रा। जिसमें इस युगनायक ने सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की अलख जगाकर इंसान को इंसानियत की पहचान कराई।

सौभाग्यशाली है सरदारशहर की वह पुण्य वसुंधरा जहाँ पिता झूमरमलजी तथा माँ नेमा की कुक्षि से एक सुकुमार राजकुमार का जन्म हुआ। जिसने १२ वर्ष की अल्पायु में ही संयम रूपी चिंतामणी रत्न को प्राप्त कर लिया। जो विनम्रता, समर्पण, सेवा, साधना व अपनी बहुमुखी योग्यता के आधार पर तेरापंथ के सर्वेसर्वा नायक बनकर जन-जन में अध्यात्म की फसल तैयार कर रहे हैं। चैतन्य जागरण का पथ प्रशस्त कर रहे हैं। छोटे-छोटे नियमों से लाईफ स्टाइल सुधार रहे हैं।

तेरापंथ के अखिलेश! अर्हत वाङ्मय के 'तिन्नाणं तारयाणं', 'निच्चं चित्त समाहिओ हवेज्जा', 'काले कालं समायरे', 'पुढवी समे मुणी हवेज्जा' आदि स्वर्ण मुक्ताओं से आपश्री का जीवन समलंकृत बन रहा है। अध्यात्म का इंद्रधनुषी रंग आपश्री के हर श्वास में प्रतिबिंबित हो रहा है।

शासन सम्राट्! आपश्री का Decision Power, Patience, Positive Thinking and Peaceful life आदि अनुपम गुणों की सौरभ से संपूर्ण धर्मसंघ सुवासित हो रहा है।

संघ शिरोमणे! देश-विदेश में नए-नए कीर्तिमानों का ध्वज फहराकर आपने जिनशासन की अभूतपूर्व विजय पताका फहराई है।

प्रभो! आपश्री की वरदाई शरण में सीप की हर बूँद मोती बनकर निखर रही है। आपश्री के जीवन की पुस्तक का एक-एक शब्द, एक-एक अक्षर, एक-एक पंक्ति, एक-एक पन्ना प्रखर प्रेरणादायी है। गुरुनानक देव ने ऐसे महामानव के लिए कहा–ऐसे लोग विरले होते हैं, जिन्हें परखकर आत्म-मंदिर में विराजमान कर सकें।

षष्टिपूर्ति के मंगलमय पुनीत क्षणों में तथा युगप्रधान अलंकरण पदाभिषेक समारोह में तेरापंथ के महासूर्य तथा मेरे जीवन के भाग्य-निर्माता की सहस्रों बार वर्धापना! अभ्यर्थना!! अभिवंदना!!!

षष्टिपूर्ति पर तुम्हें बधाएँ, ओ शासन सरताज!
तुम सा सक्षम गणमाली पा हमें भाग्य पर नाज।
स्वस्थ रहें और शतक मनाएँ अंतर्मन आवाज,
ज्योतिपुंज से रहे प्रकाशित तेरापंथ समाज।।

शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

पर्वत पाटिया।

मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में जैन संस्कार विधि से शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र के समुच्चारण से मुनिश्री ने कार्यक्रम की शुरुआत की। विजयगीत का संगान तेयुप कोषाध्यक्ष महेंद्र बोथरा एवं कार्यकारिणी सदस्य प्रशांत महनोत ने किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन तेरापंथी सभा के निवर्तमान अध्यक्ष कमल कुमार पुगलिया ने किया और सभी श्रावक समाज ने उनके साथ-साथ दोहराया।

निवर्तमान अध्यक्ष वक्तव्य चंद्रप्रकाश परमार ने किया। उसके पश्चात निवर्तमान अध्यक्ष ने नव मनोनीत अध्यक्ष प्रदीप कुमार पुगलिया को मुनिश्री के सान्निध्य में शपथ ग्रहण करवाई। तत्पश्चात नवमनोनीत अध्यक्ष ने अपनी टीम की घोषणा की तथा सभी को शपथ दिलाई। मुनिश्री ने नव गठित टीम के लिए मंगलभावना प्रेषित की। संस्कारक के रूप में रवि मालू एवं श्रेयांस बुच्चा ने अपनी सेवा दी। अभातेयुप सदस्य कुलदीप कोठारी निवर्तमान सभा अध्यक्ष कमल कुमार पुगलिया, तेयुप परामर्शक अनिल चौधरी, महिला मंडल अध्यक्षा ललिता पारख सभी ने नवगठित टीम को मंगलभावना प्रेषित की। कार्यक्रम का संचालन मंत्री विनय जैन और आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष-प्रथम दिलीप चावत ने किया।

अपना घर आश्रम पहुँचे जैन मुनि

कटक।

मुनि जिनेश कुमार जी 'अपना घर आश्रम' कटक पधारने पर संस्था के पदाधिकारियों द्वारा मुनिवृंदों का भावभीना स्वागत किया गया। इस अवसर पर मुनिवृंद के प्रवचन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित मंदबुद्धि दरिद्रनारायण प्रभुजी को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि सेवा बहुत बड़ी शक्ति है। सेवा वशीकरण मंत्र है। सेवा करने वाला प्रभु बन जाता है। सेवा से मानवता का विकास होता है। सेवा के लिए समर्पण व अनाग्रह चेतना का विकास जरूरी है।

अपना घर आश्रम में लावारिश, मंदबुद्धि बुजुर्गों की सेवा की जाती है। लौकिक दृष्टि से यह सेवा का महत्त्वपूर्ण कार्य है। मुनिश्री ने आगे कहा कि निस्वार्थ भाव से सेवा करने वाले व्यक्ति की सेवा ही सेवा है। संस्था हमेशा पवित्र कार्य करती रहे। सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति जरूरी है। मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलाचरण गीत से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर सुखदेव लाडसरिया, नथमल लाडसरिया, सुभाष भूरा, बच्छराज बेताला, दिलीप विनायकिया, मुन्ना भाई जैन ने अपने विचार रखे। संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

✦ *व्यक्ति नशे के दुष्परिणामों को समझ ले तो नशे की लत से छुटकारा मिल सकता है। गलत कार्यों में व्यक्ति धन का नियोजन क्यों करे?*

– आचार्यश्री महाश्रमण

वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन

बैंगलुरु।

तेरापंथ सभा भवन, गांधीनगर में ज्ञानशाला द्वारा आयोजित शिविर के लाभार्थी बालक-बालिकाओं को प्रेरणा देते हुए शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन किया गया।

साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। प्रज्ञा संगीत सुधा टीम द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। ज्ञानशाला बालिकाओं द्वारा मंगलाचरण गीतिका की प्रस्तुति दी गई। ज्ञानशाला संयोजक जुगराज श्रीश्रीमाल ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। तेयुप अध्यक्ष विनय बैद ने पधारे हुए सभी का स्वागत किया। शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने वीतराग का विज्ञान विषय पर प्रेरणा दी।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि जुगराज श्रीश्रीमाल ने अपनी भावनाएँ प्रेषित की। किशोर मंडल से चिरायु मूथा व हर्षित गुगलिया ने मंत्री मुनि एवं बालक मोहन के संवाद की अभिनय प्रस्तुति दी। विशिष्ट अतिथि तेरापंथ टाइम्स के संपादक दिनेश मरोठी ने अनुमोदना की विशिष्टता, उपयोगिता एवं प्राथमिकता पर उपस्थित सहभागियों को अवगत करवाया। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने वीतराग पथ अनुप्रेक्षा पर प्रकाश डाला।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी, साध्वी उदित प्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी व साध्वी चेतनाश्री जी ने सुमधुर गीतिका की प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभा, गांधीनगर अध्यक्ष सुरेश दक, राजराजेश्वरी नगर सभा अध्यक्ष मनोज डागा, तेयुप उपाध्यक्ष रणजीत राखेचा, सहमंत्री विवेक मरोठी, ज्ञानशाला सह-संयोजक गौतम डोसी व ज्ञानशाला अध्यापिकाओं की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन परिषद सहमंत्री प्रदीप चोपड़ा ने किया व सभी के प्रति आभार मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया

वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन

मैसूर।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में व मैसूर तेयुप के तत्त्वावधान में वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ० साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि सूर्यमुखी फूल दिन में खिलता है व चंद्रमुखी फूल रात में और अंतर्मुखी व्यक्ति दोनों समय में खिलता है। अंतर्मुखी व्यक्ति की चिंतन, निर्णय और क्रियान्विति में दूरी नहीं होती। जो आत्मस्थ होता है वही वीतराग पथ पर चढ़ सकता है।

साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि कथन और कर्म, आचरण और उच्चारण, कथनी और करनी में समान रहने वाला ही वीतराग बनता है। वीतराग बनने के लिए भीतर की चेतना को जगाना होगा। साध्वी दक्षप्रभा जी एवं साध्वी मेरुप्रभाजी ने गीतिका प्रस्तुत की।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के नवकार मंत्र से शुरुआत हुई। विमल पितलिया ने मंगलाचरण किया। तेयुप मैसूर ने विजय गीत का संगान किया। मैसूर प्रभारी राकेश दक ने श्रावक निष्ठा पत्र का स्मरण कराया। तेयुप के अध्यक्ष विक्रम पितलिया ने सभी का स्वागत किया। सोहन, कोप्पल सभा अध्यक्ष पारस जीरावला, कोप्पल पूर्व अध्यक्ष प्रमोद जीरावला, कोप्पल किशोर मंडल संयोजक ऋषभ जीरावला आदि उपस्थित रहे।

मैसूर प्रभारी राकेश का सम्मान मैसूर सभा अध्यक्ष शांतिलाल कटारिया, महिला मंडल अध्यक्षा मंजु दक, ट्रस्ट अध्यक्ष भेरूलाल पितलिया, अभातेयुप सदस्य मुकेश गुगलिया, ललित मेहर, महासभा सदस्य महावीर देरासरिया आदि उपस्थित रहे। कार्यशाला में आसपास के क्षेत्र के लोग, नंजनगुड के तेयुप टीम, एच डी कोटे के ज्ञानशाला बच्चे व मैसूर ज्ञानशाला के बच्चे, प्रशिक्षिका बहन उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन संगठन मंत्री विनोद मुनोत व आभार मंत्री विक्रम गांधी मेहता ने किया।

हमारे विचार अग्निशिखा ज्यों ऊर्ध्वमुखी हो

पुरुषवाक्कम, चेन्नई।

अग्नि को किधर से ही जलाओ, उसकी शिखा ऊपर की ओर रहेगी। पानी निम्नमुखी होता है, वह नीचे की ओर बहता है। हमारे विचार और संकल्प अग्नि शिखा ज्यों ऊर्ध्वमुखी होने चाहिए। पानी की तरह निम्न मुखी नहीं, विचार और संकल्प ही हमारे भाग्यविधाता हैं। यह विचार मुनि सुधाकर कुमार जी ने व्यक्त किए।

मुनिश्री ने आगे कहा कि शास्त्रों में कहा है–विचार ही उत्थान-पतन तथा बंधन-मुक्ति के मुख्य हेतु हैं। जीवन में परिस्थितियों के रंग बदलते रहते हैं। इससे पूर्व मुनिवृंद नार्थ टाउन से विहार कर प्रकाशचंद मुकेश कुमार मूथा के निवास स्थान पर पधारे। रास्ते में स्थानकवासी समाज की प्रबुद्ध साध्वी सुधाकंवर जी से आध्यात्मिक मिलन हुआ।

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

भिक्षु धम्म जागरण का आयोजन

साउथ हावड़ा।

तेयुप, साउथ हावड़ा द्वारा शनिवारिक सामायिक एवं महामना भिक्षु के सुदी तेरस के उपलक्ष्य में भजन संध्या का आयोजन कमल सिंह मनोज सुराणा के निवास पर किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ किया एवं उपस्थित सभी का स्वागत किया।

साउथ हावड़ा की युवा शक्ति एवं पारिवारिक जन ने अपनी अभिव्यक्ति भजनों एवं गीतिकाओं के माध्यम से दी। उपाध्यक्ष 'द्वितीय' ज्ञानमल लोढ़ा, सहमंत्री राहुल दुगड़, भिक्षु धम्म जागरण के संयोजक हर्ष बांठिया, सह-संयोजक रोहित बैद, विकास कोचर, अजीत दुगड़, बाबूलाल दुगड़, संदीप नाहर एवं पारिवारिकजनों ने उपस्थित होकर भजनों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन सह-संयोजक रोहित बैद ने किया। उपस्थित सभी का आभार ज्ञापन संयोजक हर्ष बांठिया ने किया।

मेगा हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन

साउथ हावड़ा।

अभातेयुप के अंतर्गत तेयुप द्वारा निःशुल्क मेगा हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन साउथ हावड़ा तेरापंथी सभा, मल्लिक फाटक में हावड़ा के समाज सेवी एवं पूर्व पार्षद शैलेश राय के सहयोग से हुआ। कैंप का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। परिषद के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने उपस्थित सभी का स्वागत किया।

हेल्थ चेकअप कैंप में विभिन्न डॉक्टरों की उपस्थिति में १७०० लोगों का चेकअप हुआ। बीमारियों के उपचार से संबंधित टेस्ट की सुविधा उपलब्ध समाज एवं अन्य समाज के लोगों के लिए करवाई गई।

कार्यक्रम में उपाध्यक्ष ज्ञानमल लोढ़ा, मंत्री गगन दीप बैद, सहमंत्री अमित बेगवानी, सहमंत्री राहुल दुगड़, कोषाध्यक्ष विजयराज पगारिया, संगठन मंत्री सुमित बैद, हेल्थ चेकअप के संयोजक अभिषेक खटेड़, प्रवीण कुमार बैंगाणी सहित हितेंद्र बैद, रोहित बैद, मनीष बैद, निखिल बांठिया, करण गोलछा सहित लगभग ४० युवकों की सक्रिय उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के प्रायोजक अशोक पीयूष मेहुल जैन का एवं सहयोगी मित्र संघ हॉसिपटल, नागरिक स्वास्थ्य संघ का आभार। कार्यक्रम में उपस्थित सभी का आभार ज्ञापन विजय राज पगारिया ने किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

जयपुर।

गर्मी के मौसम में ब्लड बैंकों में रक्त की कमी को देखते हुए तेयुप व ज्योति हॉस्पीटल, विश्वकर्मा इंडस्ट्रीज एरिया, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। परिषद के अध्यक्ष राजेश छाजेड़ के नेतृत्व में संयोजकों के प्रयास से कैंप संयोजक अनुज माथुर (ज्योति हॉस्पीटल) के सहयोग से ३१ यूनिट रक्त का संग्रह हुआ।

तेयुप के मंत्री सुरेंद्र नाहटा ने बताया कि शिविर में अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य श्रेयांस बैंगाणी, तेयुप जयपुर कार्यसमिति सदस्य कुलदीप बैद, सुमित बाफना ने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया तो ज्योति हॉस्पीटल के डायरेक्टर डॉ० जेपी माहेश्वरी व तेयुप, जयपुर के सदस्य अमित बाफना ने स्वयं रक्तदान कर जन-सामान्य को रक्तदान के लिए प्रेरित किया।

शिविर की संयोजना में मुख्य संयोजक दीपक भंसाली, सह-संयोजक प्रवीण भूतोड़िया, वरुण बरड़िया सहित ज्योति हॉस्पीटल के सहयोग से शिविर में रक्त का संग्रहण अग्रसेन ब्लड बैंक के द्वारा किया गया।

तेरापंथ टास्क फोर्स की फिजिकल कार्यशाला का शुभारंभ

सूरत।

साध्वी लब्धिश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ टास्क फोर्स की दो दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ तेरापंथ भवन सिटीलाइट में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र के साथ हुई। विजय गीत का संगान जिनेश हीरावत ने किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन गौतम बाफना द्वारा किया गया।

तेयुप अध्यक्ष गौतम बाफना द्वारा पधारे हुए सभी का स्वागत किया गया। कार्यशाला में अभातेयुप के पधारे टीटीएफ सहप्रभारी हिमांशु डूंगरवाल, क्षेत्रीय प्रभारी पवन नौलखा और श्रेणीक का सम्मान किया गया। एनडीआरएफ टीम के इंस्पेक्टर मनीष का सम्मान किया गया।

अभातेयुप के राष्ट्रीय सहप्रभारी हिमांशु, क्षेत्रीय प्रभारी पवन, एनडीआरएफ इंस्पेक्टर मनीष एवं किशोर मंडल संयोजक संयम ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वीश्री जी ने मंगल उद्बोधन में इस कार्यशाला को समाज के लिए उपयोगी बताया और सभी संभागियों के प्रति मंगलकामना प्रेषित की। पधारे हुए सभी अतिथि एवं संभागियों का आभार ज्ञापन मंत्री अभिनंदन गादिया द्वारा किया गया।

सायक्लॉथोन का आयोजन

मैसूर।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में तेयुप, मैसूर द्वारा सायक्लॉथोन का आयोजन किया गया। मैसूर के ज्ञानशाला के बच्चों से लेकर सभा के कार्यकर्ता तक सभी लोगों ने उत्साह के साथ साइकिल रैली में सहभागी बने।

इस रैली का उद्देश्य—Plant Green, Save Water, Donate Red के चलते आयोजित इस कार्यक्रम में लगभग ७० श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। तेरस के उपलक्ष्य में तेरापंथ भवन, मैसूर में धम्म जागरण का आयोजन हुआ एवं दो जगह पर निःशुल्क बॉडी चैकअप का भी आयोजन किया गया।

महाश्रमणोस्तु मंगलम्

साउथ कोलकाता।

अभातेयुप के निर्देशन में युवा दिवस के उपलक्ष्य में महाश्रमणोस्तु मंगलम के अंतर्गत प्रेरणा पाथेय कार्यक्रम तेरापंथ भवन, साउथ कोलकाता में आयोजित हुआ। जिसमें तेयुप, साउथ कोलकाता ने सहभागिता दर्ज कराई।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामुहिक जाप से हुआ। तत्पश्चात मंगलाचरण समस्त तेयुप सदस्यों द्वारा किया गया। युवा दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों ने अपने वक्तव्य रखे। तेयुप, साउथ कोलकाता के सदस्यों ने गीतिका के द्वारा अपनी वंदना गुरुचरणों में समर्पित की।

साध्वी स्वर्णरेखाजी ने गीतिका एवं मंगल उद्बोधन दिया। साध्वीश्री जी के मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम समापन हुआ।

कार्यक्रम में साउथ सभा के मंत्री खेमचंद रामपुरिया, महासभा के प्रधान न्यासी सुरेश गोयल, अभातेयुप सदस्य जय चोरड़िया, सुनील दुगड़, नरेंद्र छाजेड़, सूर्य प्रकाश डागा, प्रवीण कुमार सिंघी, तेयुप साउथ कोलकाता के १५ सदस्यों ने सहभागिता दर्ज कराई।

शुभा मेहता बनीं राजस्थान उच्च न्यायालय की न्यायाधिपति

राजस्थान।

सुंदरलाल मेहता की पुत्री जस्टिस शुभा मेहता ने ६ जून को राजस्थान हाईकोर्ट में न्यायाधिपति पद की शपथ लेने के साथ ही राजस्थान उच्च न्यायालय के इतिहास में एक नया रिकॉर्ड दर्ज हो गया। शुभा मेहता के पति जस्टिस महेंद्र गोयल पहले से ही हाईकोर्ट में न्यायाधिपति हैं। राजस्थान हाईकोर्ट के ७२ साल के इतिहास में यह पहले दंपति होंगे जो मामलों की सुनवाई करेंगे। शुभा मेहता को न्यायिक कोर्ट (जिला न्यायाधीश) से न्यायाधिपति गनाया गया है। यह जैन श्वेतांबर तेरापंथ समाज के लिए अत्यंत हर्ष का विषय है।

उदयपुर जिले के मावली की मूल निवासी शुभा मेहता ने राज्य न्यायिक सेवा में चयन के साथ ही वर्ष १९९२ में अपने कैरियर की शुरुआत की। इनके पिता सुंदरलाल मेहता भी जिला एवं सत्र न्यायाधीश रहे हैं। तेरापंथ समाज से ताल्लुक रखने वाले मृदुभाषी, उदारमना सुंदरलाल मेहता प्रमुख श्रावक हैं। गणाधिपति तुलसी ने उन्हें 'प्रामाणिक प्रवर' की उपाधि से अलंकृत किया था। सुंदरलाल मेहता आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के साथ ही वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण जी के अनन्य श्रावकों में हैं।

एलएलबी में गोल्ड मेडलिस्ट रह चुकी शुभा मेहता ने भी राजस्थान उच्च न्यायालय में न्यायाधिपति पद पर नियुक्ति के साथ ही पारिवारिक परंपराओं को आगे बढ़ाने का प्रशंसनीय कार्य किया है।

जस्टिस शुभा मेहता के पति राजगढ़ (चूरू जिला) निवासी जस्टिस महेंद्र गोयल को ६ नवंबर, २०१९ को राजस्थान हाईकोर्ट का न्यायाधिपति नियुक्त किया गया था। वे अधिवक्ता कोटे से राजस्थान हाईकोर्ट में न्यायाधिपति बने थे। उनके पिता अनूपचंद गोयल भी राजस्थान हाईकोर्ट में न्यायाधिपति रह चुके हैं।

आगम मंथन प्रतियोगिता का सुयश

टोहाना।

जैन विश्व भारती लाडनूं के समण संस्कृति संकाय के तत्त्वावधान में आयोजित आगम मंथन प्रतियोगिता वर्ष २०२१-२२ का परिणाम घोषित किया गया, जिसमें टोहाना केंद्र का परिणाम बहुत ही उत्कृष्ट रहा। यहाँ से १४ प्रतिभागियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया और सभी के ९० प्रतिशत से अधिक अंक आए हैं।

तेमम की संगठन मंत्री अंजु जैन ने ६०० में से ५९६ अंक प्राप्त कर टोहाना में प्रथम स्थान प्राप्त किया है तथा दूसरे राउंड के लिए चयनित हुई है। महिला मंडल की सहमंत्री निर्मला गर्ग के ६०० में से ५९४ अंक आए हैं और वह भी दूसरे राउंड के लिए चयनित हुई है।

इस प्रतियोगिता में पुरुष वर्ग में केवल एक ही व्यक्ति सभा के पूर्व मंत्री सुभाष जैन ने भाग लिया था और उन्होंने ९४:५ प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। इसके अतिरिक्त उर्मिला जैन, सृष्टि जैन, एकता जैन, अनीता जैन, प्रमिला जैन, किरण जैन, श्वेता जैन, सुनीता जैन व सुधा जैन ने भी भाग लिया और बहुत ही अच्छे अंक प्राप्त किए। जैन विश्व भारती द्वारा नियुक्त आगम सहयोगी तथा महिला मंडल अध्यक्षा उषा जैन ने सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ प्रेषित की।

भक्ति संध्या का आयोजन

रतननगर, जोधपुर।

तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम आचार्य आचार्य भिक्षु की मासिक तेरस पर तेरापंथी सभा, सरदारपुरा द्वारा शासनश्री साध्वी सत्यवतीजी के सान्निध्य में भक्ति संध्या का आयोजन किया गया।

रतननगर में आयोजित हुए इस भक्ति संध्या में तेयुप के जितेंद्र गोगड़, निर्मल छल्लाणी आदि ने तेयुप भजन मंडली के साथ आचार्य भिक्षु को समर्पित भजनों से वातावरण को संगीतमय बना दिया। इस अवसर पर तेमम, सरदारपुरा द्वारा भी गीतों का संगान किया गया।

साध्वी शशिप्रभाजी ने गीत के माध्यम से अभिवंदना व्यक्त की। इस भक्ति संध्या में सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष सुरेशचंद जीरावला, अभातेयुप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रेयांस कोठारी, तेयुप सरदारपुरा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष महावीर चौधरी, महिला मंडल अध्यक्षा सरिता कांकरिया, महावीर चौपड़ा, निर्मल छल्लाणी आदि की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 - 26 जून, 2022

✦ *व्यक्ति का हृदय परिवर्तन हो और व्यवस्था भी अनुकूल हो तो दोनों के योग से 'नैतिकता की सरिता, महक उठे मानवता' की बात उजागर हो सकती है।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

युवा दिवस के अवसर पर कार्यशाला का आयोजन

गांधीधाम-भुज।

गांधीधाम एवं भुज तेयुप के संयुक्त तत्त्वावधान में आचार्यश्री महाश्रमण जी के ४९वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में 'कच्छ युथ कनेक्ट' कार्यशाला का आयोजन डॉ० मुनि पुलकित कुमार जी के सान्निध्य में भद्रेश्वर जैन मंदिर तीर्थ परिसर में किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि आचार्य महाश्रमण जी को संसार समुद्र से पार करवाने हेतु गुरुआज्ञा से शासन स्तंभ श्रद्धेय मंत्रीमुनिश्री सुमेरमल जी स्वामी ने आज के ही दिन संयम रूपी नौका प्रदान की थी। मुनि आदित्य कुमार जी ने युवाओं को संतों के साथ कनेक्ट रहते हुए जीवन में निखार लाने की प्रेरणा दी।

कार्यशाला का शुभारंभ मुनिश्री के द्वारा महामंत्रोच्चार से हुआ। कार्यशाला के प्रथम चरण में 'महाश्रमणोस्तु मंगलम्' भजन कार्यक्रम के अंतर्गत आचार्यश्री महाश्रमण जी की अभ्यर्थना में भुज से दृष्टि संघवी ने महाश्रमण अष्टकम् तथा उपासक पारस बाफना, गांधीधाम तेयुप उपाध्यक्ष रोहित ढेलड़िया, संगठन मंत्री हर्षित दोशी एवं मुनि पुलकित कुमार जी, मुनि आदित्य कुमार जी ने गीत की प्रस्तुतियाँ दी।

कार्यशाला के द्वितीय चरण में तेरापंथी महासभा के कच्छ प्रभारी शांतिलाल जैन, गांधीधाम तेरापंथी सभा अध्यक्ष त्रिभुवन संघवी, भुज सभा अध्यक्ष वाडीलाल मेहता, भुज तेयुप अध्यक्ष आशीष बाबरिया, संगठन मंत्री आदर्श संघवी तथा सहमंत्री श्रेयांस बोथरा ने वक्तव्य दिया।

मुनि पुलकित कुमार जी एवं मुनि आदित्य कुमार जी ने प्रशिक्षण सत्र में युवाओं को विशेष संबोधन दिया। कार्यशाला के अंतर्गत आचार्य महाश्रमण प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। जिसमें प्रथम स्थान पर मुंद्रा से सरोज देवी बरमेचा, द्वितीय हंसमुखभाई मेहता एवं तृतीय महेंद्र संघवी, रोहित ढेलड़िया रहे, जिन्हें पारितोषिक देकर सम्मानित किया गया। गांधीधाम तेयुप मंत्री संदीप संघवी ने आभार ज्ञापन तथा कार्यक्रम का संचालन गांधीधाम तेयुप उपाध्यक्ष रोहित ढेलड़िया ने किया।

ज्ञानशाला शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

कोलकाता।

ज्ञानशाला प्रकोष्ठ ने २०२२ से २०२४ तक वृहद कोलकाता एवं दक्षिण बंगाल ज्ञानशाला के आंचलिक संयोजिका का पद डॉ० प्रेमलता बाई चोरड़िया को सौंपा गया। महासभा के भिक्षु ग्रंथागार में डॉ० प्रेमलता बाई चोरड़िया एवं उनकी पूरी टीम ने शपथ ग्रहण की तथा कार्यभार ग्रहण किया। कार्यक्रम में लगभग हर क्षेत्र से प्रशिक्षिका बहनें उपस्थित रहीं।

कोलकाता सभा के अध्यक्ष अजय भंसाली उपस्थित थे। उन्होंने अपनी शुभकामनाएँ दी एवं सभी सदस्यों को निष्ठा पत्र का वाचन कराया। सभी क्षेत्रीय संयोजकों ने अपना-अपना वक्तव्य रखा।

मालचंद ने अपने वक्तव्य के साथ नियमों की घोषणा की। सह-संयोजक संजय ने कहा कि सभी मिलकर कार्य करेंगे।

वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन

धरान, नेपाल।

अणुव्रत समिति, धरान नेपाल द्वारा ओशो पार्क, धरान में पर्यावरण सप्ताह के अवसर पर वृक्षारोपण का कार्यक्रम किया गया, जिसमें विभिन्न प्रजाति के लगभग १२५ पौधे लगाए गए। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति धरान के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष, संगठन मंत्री, निवर्तमान अध्यक्ष तथा सदस्यों की उपस्थिति रही।

उक्त कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद, धरान का भी पूर्णरूप से सहयोग रहा। सभी के सहयोग से कार्यक्रम सफल होने पर अध्यक्ष मोनिका देवी दुगड़ ने आगे भी ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करते रहने का विचार व्यक्त करते हुए उपस्थित सभी का आभार व्यक्त किया।

व्यक्ति व्यस्त रहे परंतु...

(पृष्ठ १६ का शेष)

संतों की वाणी से जनता को भी अच्छा लाभ मिल सकता है। साधना से युक्त साधुओं की कल्याणी वाणी हो, उस वाणी का अपना महत्त्व होता है। हम प्रवचन में तीन बातें सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की बात बताया करते हैं। गृहस्थों का जीवन कैसे अच्छा रहे? आत्मा भी अच्छी हो सके, उसके लिए ये तीन बातें समझाते हैं।

अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान में भी अहिंसा-समता की बातें बताई गई हैं। हम व्यस्त भले हो जाएँ, पर हमारा दिमाग अस्त-व्यस्त न हो। कर्म के साथ धर्म जुड़ जाए। धर्म दो प्रकार के हैं–उपासनात्मक और आचरणात्मक। दोनों में एक को चुनना हो तो आचरणात्मक धर्म को चुनो। जीवन में अहिंसा, संयम, मैत्री रखो तो कल्याण हो जाएगा।

मुसल की चोरी कर सूई का दान देने से पाप नहीं धुलता है। सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति जीवन में होती है, तो जीवन अच्छा और शांतिमय रह सकेगा। भीनासर से अनेक साधु-साध्वी, समणी संघ को प्राप्त हुए हैं। भीनासर की जनता में खूब धर्म की चेतना रहे। मंगलकामना।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि चलते रहोगे तो कुछ पाओगे। आचार्यप्रवर की यह यात्रा महानिर्जरा की यात्रा हो रही है। आतप एक भीषण परिषह है। जिसके मन में लोक-कल्याण व संघ-विकास की भावना रहती है, वह परिषहों को सहन करते हुए आगे बढ़ता रहता है। जिस संघ में श्रद्धा होती है, वह प्राणवान संघ होता है। हमारे धर्मसंघ में साधु-साध्वियों की ही नहीं, श्रावक-श्राविकाओं की श्रद्धा भी बेजोड़ है। जिसके मन में संघ व गुरु के प्रति श्रद्धा होती है, वह बहुत कुछ पा सकता है।

साध्वी ललितकला जी जिनका आगामी चातुर्मास भीनासर में ही होने वाला है, ने अपनी भावना पूज्यप्रवर के चरणों में अर्पित की। समणी मधुरप्रज्ञाजी जो भीनासर की ही हैं, उन्होंने भी पूज्यवर के स्वागत में अपने भाव अभिव्यक्त किए।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना एवं स्वागत में तेरापंथ महिला मंडल गीत एवं अध्यक्षा मौनिका सेठिया, ज्ञानशाला, तेयुप अध्यक्ष ऋषभ डागा, सभा मंत्री महेंद्र बैद, अभातेयुप अध्यक्ष पंकज डागा, तेरापंथ सभाध्यक्ष पानमल डागा, उपासिका पुष्पा नवलखा, कुशल-अक्ष बैद, पूजा पटवा एवं सप्तमंडल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि जो गर्मी-ताप, अनुकूलता-प्रतिकूलता में सम रहता है, वह आत्मा का कल्याण कर सकता है।

यादें... शासनमाता की - (१२)...

(पृष्ठ १५ का शेष)

(पुनः जप रूपी पाठ आचार्यप्रवर द्वारा आरंभ–अरहंते सरणं---) कुछ ही समय में साध्वीप्रमुखाजी के श्वास का क्रम टूटने लगा और अंततः रुक गया।

डॉ० मोनिकाजी : (परीक्षण के बाद)–अब भी भीतरी स्पंदन चल रहा है। कुछ समय बाद डॉ० हीरालाल नौलखा भी उपस्थित हो गए। पुनः स्वास्थ्य का निरीक्षण कर दोनों डॉक्टर्स ने भारी मन से आचार्यप्रवर से निवेदन किया कि साध्वीप्रमुखाजी नहीं रहे।

आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार साध्वी जिनप्रभाजी आदि कुछ साध्वियों एवं मुनि धर्मरुचिजी ने अपने-अपने तरीके से जाँच करने के बाद ऐसा ही निवेदन किया। डॉ० से साध्वीप्रमुखा के महाप्रयाण की सूचना लिखित रूप में प्राप्त कर कक्ष से बाहर पधारकर आचार्यप्रवर ने एक लिखित संदेश का वाचन किया–

चिकित्सकीय निर्णय और चारित्रात्माओं की जाँच के आधार पर मैं यह सूचना दे रहा हूँ कि जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का आज प्रातः लगभग ८:४५ बजे के आसपास महाप्रयाण (देहावसान) हो गया है। उस कालधर्म प्राप्त आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना।

अनुकंपा भवन, अध्यात्म साधना केंद्र, दिल्ली
– आचार्य महाश्रमण

अत्यंत भावुक वातावरण में करीब ९:३४ पर आचार्यप्रवर साध्वीप्रमुखाजी की पार्थिव देह के निकट पधारे, नमस्कार महामंत्र का उच्चारण कर फरमाया–**'साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी हमारे धर्मसंघ में परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के उपपात में पहुँची थीं, साध्वी बनीं, साध्वीप्रमुखा बनाई गईं। हमारे धर्मसंघ की उन्होंने महान सेवा की। आज मैं उनके पार्थिव देह को जैन श्वेतांबर तेरापंथ समाज, दिल्ली को सौंप रहा हूँ। वोसिरामि-वोसिरामि।**

तदुपरांत उस कक्ष के बाहरी भाग में विराजमान हो आचार्यप्रवर ने अपने इस लिखित संदेश का वाचन किया–

आज अनुकंपा भवन, अध्यात्म साधना केंद्र महरौली में चिकित्सकीय निर्णय और चारित्रात्माओं की जाँच के आधार पर यह बताया जा रहा है कि जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी का आज दिनांक १७-३-२०२२ को प्रातः लगभग ८:४५ बजे के आसपास महाप्रयाण (देहावसान) हो गया है।

शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के महाप्रयाण के संदर्भ में जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ में पंचदिवसीय आध्यात्मिक अनुष्ठान की आराधना की घोषणा करता हूँ। तद्नुसार आज फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी से चैत्र कृष्णा चतुर्थी यानी १७ मार्च से २२ मार्च, २०२२ के प्रातः सूर्योदय तक जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के सदस्य नमस्कार महामंत्र आदि का जप, कालधर्म प्राप्त साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की स्मृति सभा आदि का यथासंभवतया आयोजन करें और मध्यस्थ भावना और आध्यात्मिक मंगलकामना का प्रयोग करें।

अनुकंपा भवन, अध्यात्म साधना केंद्र, दिल्ली
– आचार्य महाश्रमण

पूज्यप्रवर सायं ४ बजे से कुछ पूर्व शासनमाता की पार्थिव देह के पास मंच पर (अंतिम यात्रा से पहले) पधारे। बैकुंठी के निकट खड़े होकर 'लोगस्स व मंगलपाठ' उच्चरित किया। फिर मंगल उद्गार व्यक्त करते हुए फरमाया–

हमारे धर्मसंघ की शासनमाता, महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने साधिक पचास वर्षों तक साध्वीप्रमुखाजी के रूप में अपनी विराजमानता रखीं, धर्मसंघ को सेवा दी और तीन-तीन आचार्यों को अपना योगदान दिया। उनके कार्यकाल में साध्वीप्रमुखा के रूप में रहीं। ऐसी हमारी असाधारण साध्वीप्रमुखाजी आज हमसे विदा हो गईं। हम भी मानो मंगलकामना के साथ उन्हें विदाई दे रहे हैं। खूब मंगलकामना अलविदा। विदाई-विदाई।

कालजयी कर्तृत्व का आलेख रच, परमपूज्य आचार्यप्रवर से समाधि-शुद्धि का मंगलकारी पाथेय प्राप्त कर गुरुदृष्टि को देखते-देखते गुरुचरणों में अपना अंतिम श्वास अर्पित करने वाली असाधारण साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के बारे में इतना ही कहना पर्याप्त होगा–

स्वर्णिम कल से जुड़ा आज यह, कल-परसों श्री 'कनक' रहेगा।
हिमगिरि की पुत्री का पानी, अविकल यूँ ही सदा बहेगा।।

कृतज्ञता : विशेष कृतज्ञता साध्वी स्वस्तिकप्रभाजी के प्रति जिन्होंने शासनतामा साध्वी कनकप्रभाजी के जीवन के अंतिम क्षणों को 'यादें शासनमाता की---' के रूप में प्रस्तुत किया। इसके माध्यम से साधु-साध्वियों एवं श्रावक समाज को दूर रहकर भी निकटता का अहसास हुआ। **(समाप्त)**

विराट हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन

अहमदाबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्त्वावधान में तेयुप, अहमदाबाद द्वारा विराट हास्य कवि सम्मेलन सरदार वल्लभभाई पटेल मेमोरियल हॉल में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीपक संचेती एवं धीरज पोखरना ने सुमधुर मंगलाचरण से किया। तेयुप अध्यक्ष ललित बेगवानी ने स्वागत वक्तव्य प्रदान करते हुए मुख्य अतिथि, विशेष अतिथि, आमंत्रित कविगणों एवं प्रांगण में विराजमान समस्त श्रोताओं का अभिवादन किया एवं कार्यक्रम से जुड़े संयोजकों, संपूर्ण टीम का उत्साहवर्धन किया।

मुख्य अतिथि अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने अध्यक्षीय वक्तव्य के साथ अपनी विशेष शैली में काव्यपाठ करते हुए कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन किया। विशेष अतिथि अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत ने अहमदाबाद परिषद की संगठन शक्ति की प्रशंसा करते हुए युवाओं में जोश भरा। प्रबुद्ध विचारक मुकेश गुगलिया ने अध्यक्ष ललित के कार्यकाल की सराहना करते हुए तेयुप टीम की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। तेयुप, अहमदाबाद द्वारा कार्यक्रम के प्रायोजकों एवं आमंत्रित कविजनों को सम्मानित किया गया।

विराट हास्य कवि सम्मेलन में पधारे हास्य कवि बुद्धि प्रकाश दधीच, शृंगार रस कवियत्री अनामिका अम्बर, वीररस के कवि अशोक चरण, हास्य कवि शम्भू शिखर, कवि दीपक परिक एवं कवि पंकज फनकार ने वैविध्य सभर उत्कृष्ट काव्यों से हास्य से परिपूर्ण शमा बाँध कार्यक्रम में चार चाँद लगाए।

कार्यक्रम के दौरान आगामी कार्यक्रम मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के बैनर अनावरण राष्ट्रीय अध्यक्ष के द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष पंकज घीया एवं मंत्री कपिल पोखरना ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजक उपाध्यक्ष अरविंद संकलेचा, उपाध्यक्ष पंकज घीया, सहमंत्री गौतम बरड़िया, संगठन मंत्री विशाल भरसारिया, निरंजन गंग एवं दीपक संचेती के साथ कोषाध्यक्ष दिलीप भंसाली, कांति दुगड़ एवं दिलीप संकलेचा का विशेष श्रम रहा।

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग का दीक्षांत समारोह का आयोजन

राजाजीनगर।

तेयुप द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का दीक्षांत समारोह जैन स्थानक राजाजीनगर में अभातेयुप राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।

तेयुप द्वारा संचालित भिक्षु श्रद्धा स्वर टीम ने विजय गीत का संगान किया। अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोकरणा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। महामंत्री पवन मांडोत ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि पूरे देश में अब तक अभातेयुप के तत्त्वावधान में लगभग ७० से अधिक सीपीएस कार्यशाला आयोजित हुई है साथ ही तेयुप राजाजीनगर द्वारा संपादित कार्यों की सराहना करते हुए मंगलकामना संप्रेषित की। तेयुप अध्यक्ष मनोज मेहता ने स्वागत करते हुए शुभकामनाएँ प्रेषित की।

सप्त दिवसीय कार्यशाला में प्रथम दो दिन का प्रशिक्षण जोनल ट्रेनर भव्य बोथरा द्वारा दो दिवसीय जोनल ट्रेनर खुशी गांधी द्वारा एवं आखिर के दो दिन नेशनल ट्रेनर रक्षा मांडोत ने विभिन्न भाषण कला को सिखाया। सभी ३० प्रतिभागियों ने अपने भाषण से उपस्थित श्रोताओं को ओत-प्रोत कर दिया।

इसी के अंतर्गत नेशनल ट्रेनर रक्षा मांडोत ने विशेष ७ प्रतिभागियों की घोषणा की, जिनमें लता नवलखा, नीव वेदमूथा, श्रीनि कोठारी, संजय बाफना, प्रिंस चोरड़िया, चिराग बोहरा एवं दीया गन्ना रहे। आभार तेयुप मंत्री राजेश देरासरिया ने व्यक्त किया। कार्यशाला को सुव्यवस्थित आयोजन करने में कमलेश चोरड़िया, सचिन हिंगड़ एवं विमल गांधी का श्रम रहा।

राजाजीनगर सभा अध्यक्ष रोशनलाल कोठारी, सीपीएस राष्ट्रीय प्रभारी सतीश पोरवाड़ की उपस्थिति रही। श्री वर्धमान जैन श्रावक संघ के अध्यक्ष जम्बू दुगड़, मंत्री गौतम मेहता एवं प्रबंध मंडल के सदस्य उपस्थित रहे। सभी अतिथिगण ने अपने विचार व्यक्त करते हुए तेयुप को मंगलकामना प्रेषित की। तेयुप के संस्थापक अध्यक्ष सुनिल बाफना, परामर्शक प्रवीण नाहर, सभा पूर्व मंत्री मदनलाल बोराणा, तेयुप विजयनगर नवमनोनीत अध्यक्ष श्रेयांस गोलेछा एवं अभातेयुप सदस्य अमित दक एवं संपूर्ण तेयुप राजाजीनगर के सदस्यों की उपस्थिति रही।

यादें... शासनमाता की - (१२)

● साध्वी स्वस्तिक प्रभा ●

१७ मार्च, २०२२ परमपूज्य आचार्यप्रवर का अनुकंपा भवन में सूर्योदय के कुछ समय पश्चात् पावन पदार्पण, शासनमाता के कक्ष में पहुँचकर भूमि पर आसीन होकर वंदना।

साध्वियाँ : (साध्वीप्रमुखाजी से) गुरुदेव पधारे हैं।

आचार्यप्रवर : साध्वीप्रमुखाजी के सुखसाता है?

साध्वीप्रमुखाश्री ने संभवतः सिर हिलाकर स्वीकृति दी। वे पूज्यप्रवर को निहार रही थीं।

आचार्यप्रवर ने मंगलपाठ सुनाया। पूज्यप्रवर का मंगलपाठ सुनते-सुनते आँखें मूँद लीं।

आचार्यप्रवर : हम आपके पास आए हैं।

साध्वीप्रमुखाश्री : प्रत्युत्तर में कुछ बोल नहीं पाईं।

साध्वी सुमतिप्रभाजी : रात में स्वास्थ्य में बहुत उतार-चढ़ाव रहा। सुबह साढ़े चार-पाँच बजे से ही टसकने की आवाज आने लग गई, जो अब तक चल रही है।

आचार्यप्रवर : रात में चेतना कैसी थी?

साध्वी कल्पलताजी : जब हम कुछ बोल रहे थे, तब तो आँखें खोल रहे थे। पल्स को नियंत्रित करने के लिए सूर्योदय के बाद जो गोली दी, वह भी ली थी। डॉ० ने रात में ही देने के लिए कहा था, किंतु साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने रात में दवा लेने से मना कर दिया।

साध्वी सुमतिप्रभाजी : (साध्वीप्रमुखाश्री जी से) नेत्र खोलें। (साध्वीप्रमुखाश्री जी ने पलकें झपकीं, लगा वे नेत्र खोलना चाहती हों)। आचार्यप्रवर आपको कुछ त्याग कराएँ?

साध्वीप्रमुखाश्री प्रत्युत्तर नहीं दे सकीं।

मुख्य नियोजिकाजी, मुख्य मुनिश्री, साध्वीवर्याजी (समवेत निवेदन)—अभी जब आचार्यप्रवर पधारे तब साध्वीप्रमुखाश्री को निवेदन किया कि आचार्यप्रवर पधार गए हैं, तब उन्होंने हाँ के रूप में स्वीकृति दी थी।

साध्वी शशिप्रभाजी : गुरुदेव आपको दस मिनट का त्याग कराएँ?

साध्वीप्रमुखा ने हल्के से नेत्र खोले।

साध्वीवर्याजी : साध्वीप्रमुखाश्री जी (महाराज) ने नेत्र थोड़े खोले हैं।

आचार्यप्रवर : (साध्वियों से) समसामाचारी में तो पहले ही आ गए ना?

साध्वियाँ : तहत्, समसामाचारी में आ गए हैं।

आचार्यप्रवर ने भिन्न सामाचारी के प्रायश्चित्त रूप 'तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं' का उच्चारण किया। ज्ञातव्य है कि कल सायंकाल आचार्यप्रवर ने साध्वीप्रमुखाजी को सूर्योदय तक की चिकितसा की आलोयणा अग्रिम रूप में दे दी थी, जिसे उन्होंने स्वीकार भी किया और रात्रि में साध्वियों ने उनको जाप सुनाकर बता भी दिया था कि आपका प्रायश्चित्त उतर गया है।

आचार्यप्रवर : (साध्वीप्रमुखाश्री जी की ओर उन्मुख होकर कुछ तेज स्वर में)—'साध्वीप्रमुखाजी! आपको अब सागारी संथारा कराने का चिंतन है।'

साध्वीप्रमुखाजी की ओर से कोई संकेत प्राप्त नहीं हुआ।

आचार्यप्रवर : (नमस्कार महामंत्र एवं मंगलपाठ के उच्चारण के पश्चात् प्रातः ७:२७ पर) यदि आप मेरी बात को स्वीकार कर रहे हैं तो आपको सागारी रूप में तीनों आहार के त्याग हैं। खूब समता-शांति, आत्मस्थता रहे।

साध्वियाँ : (आचार्यप्रवर से) तिविहार संथारा पूरी तरह से कराने की कृपा कराएँ।

आचार्यप्रवर : जब तक साध्वीप्रमुखाजी स्वयं स्पष्ट रूप में संकेत न करें, तब तक सागारी रूप में ही संथारा पचखाया जा सकता है।

पूज्यप्रवर कुछ समय के लिए समीपस्थ कक्ष में पधारे। साध्वियों आदि ने जप शुरू किया—

अरहंते सिद्धे साहू धम्मं सरणं तु पवज्जामि।
विघ्नहरण मंगलमय सिद्धि, शरण सदा अंतर्यामी।।

कुछ समय पश्चात् आचार्यप्रवर का पुनरागमन, करीब ८:१३ पर साध्वीप्रमुखाजी ने आँखों खोलीं। सामुहिक जप का क्रम गतिमान।

आचार्यप्रवर : साध्वीप्रमुखाजी! सुखसाता हैं? अब पूरा संथारा करा दें क्या?

साध्वीप्रमुखाश्री ज्ञात रूप में कोई प्रतिक्रिया नहीं दे पाईं।

आचार्यप्रवर द्वारा उच्चरित शरण सूत्र का सामुहिक जप के रूप में क्रम चलता रहा। साध्वीप्रमुखाश्री के श्वास की गति क्रमशः मंद पड़ने लगी। साधु-साध्वियों से परामर्श के पश्चात

आचार्यप्रवर : साध्वीप्रमुखाजी चौविहार संथारा करवाएँ क्या? आपकी इच्छा हो तो संकेत करें। भले आप धीमे से बोल दें—हाँ। (उच्च स्वर में नमस्कार महामंत्र, मंगलपाठ, ॐ भिक्षु, जय तुलसी, जय महाप्रज्ञ की उच्चारण कर करीब प्रातः ८:२६ पर) यदि आप स्वीकार कर रहें तो आपको यावज्जीवन सागारी रूप में चारों आहार का त्याग है।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 - 26 जून, 2022

✦ *आदमी को अहिंसा, संयम और तप में पुरुषार्थ करना चाहिए। इन तीनों में सम्यक् पुरुषार्थ करने वाला आदमी मोक्ष की दिशा में गतिमान हो सकता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

व्यक्ति व्यस्त रहे परंतु अस्त-व्यस्त ना रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

भीनासर, ११ जून, २०२२

जैन जगत के उज्ज्वल नक्षत्र आचार्यश्री महाश्रमण जी लगभग १५ किमी का इस भीषण सूर्य के आतप में विहार करते हुए पलाणा से भीनासर पधारे। भीनासर गंगाशहर से पुराना श्रद्धा का क्षेत्र है। समय-समय पर पूज्यवरों का जब भी गंगाशहर-बीकानेर पधारना हुआ है, तो भीनासर को भी अपनी चरण रज से पवित्र किया है।

विशाल जनमेदिनी को पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए धर्मज्ञाता ने फरमाया कि हम सब मनुष्य हैं, और मनुष्य जन्म को प्राप्त करना भी एक विशेष बात होती है। चौरासी लाख जीव-योनियाँ बताई गई हैं। उनमें से मनुष्य जन्म मिलना कठिन भी है और महत्त्वपूर्ण भी है।

मनुष्य ही ऐसा प्राणी होता है, जो मोक्ष को प्राप्त कर सकता है इस जन्म के ठीक बाद। अन्य किसी जन्म से मोक्ष नहीं प्राप्त किया जा सकता, यह मान्यता, सिद्धांत है। कई-कई जन्मों तक जीवों को तपस्या-साधना करनी होती है, तब जाकर मनुष्य जन्म पाकर मोक्ष की प्राप्ति वह कर सकता है। यह एक प्रसंग से समझाया।

भगवान महावीर ने भी पिछले जन्मों में कितनी तपस्या-साधना की होगी, आखिरकार वे महावीर के भव से मुक्ति को प्राप्त हो गए। मानव जीवन में तपस्या-साधना, वैराग्य वृद्धिंगत हो, आदमी मुक्ति की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

भारत में ऋषियों की परंपरा है। अतीत में कितने ऋषि-महर्षि हुए हैं, आज भी हैं। पुराने संतों की जो उपलब्धियाँ-तपस्या थी, उतनी आज न भी हो। जहाँ संतों का विहरण होता है, वो क्षेत्र भी अपने आपमें भाग्यशाली है।

साध्वी विनयप्रभाजी का देवलोकगमन

अहमदाबाद।

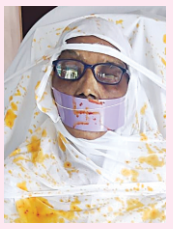

साध्वी विनयप्रभाजी का २७ मई, २०२२ को तिविहार संथारे में मणिनगर, अहमदाबाद में देवलोकगमन हो गया।

आपका जन्म विक्रम संवत् २०११ भाद्रव शुक्ला ५ मातुश्री रतनी देवी, पिता माणकचंद तातेड़ के प्रांगण में हुआ। दीक्षा वि०सं० २०३७, वैशाख शुक्ला ८ को गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के करकमलों से लाडनूं में हुई। दीक्षित होकर ६ महीने लगभग गुरुकुलवास में रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ, फिर पूज्यप्रवर ने महत्ती कृपा कर साध्वी रामकुमारी को वंदना कराई। तब से लेकर अंतिम श्वास तक तन की पछेवड़ी बनकर रहे।

कंठस्थ ज्ञान : भक्तामर, कल्याणमंदिर, आलंबन सूत्र कर्तव्य षट्त्रिंशिका, रत्नाकर पच्चीसी, संस्कृत चौबीसी, आराधना, चौबीसी, २५ बोल, तत्त्वचर्चा, जैन तत्त्व प्रवेश पंच सूत्रम् तेरापंथ प्रबोध आचार, संस्कार, व्यवहार बोध अष्टकम् दसवेंआलियं कुछ गीत व व्याख्यान आदि कला-रंगाई, सिलाई व गीत बनाना कंठ कला मधुर थी। आपकी जप में विशेष रुचि थी। कैंसर जैसी भयानक बीमारी में भी समता भाव प्रशस्त था। त्याग के प्रति पूर्ण सजग थे।

संघ व संघपति के प्रति प्रगाढ़ आस्था व श्रद्धा के भाव थे। जीवन में अप्रमत्त भाव व सेवा भावना थी। आगम-स्वाध्याय की रुचि थी। दीक्षा के प्रथम वर्ष में अग्नि परीक्षा कंठस्थ कर रात्रि में व्याख्यान दिया। दूसरे वर्ष में ओघा बनाकर भेंट किया। रुग्णावस्था में सेवा भावना की अनुमोदना करते हुए कहते कि ऐसी सेवा गृहस्थ में होनी मुश्किल है।

तेरापंथ धर्मसंघ में आपकी संसारपक्षीय बहिन साध्वी आत्मप्रभा, भतीजी मधुस्मिताजी, स्वास्थ्यप्रभाजी, कल्पनाश्री जी दीक्षित हैं।

शासनश्री साध्वी रामकुमारी जी ने २७ मई, २०२२ को प्रातः ४:२६ बजे तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया। लगभग २ घंटे के संथारे के साथ २७ मई को प्रातः ६:५० बजे देवलोकगमन हो गया। तेरापंथ भवन कांकरिया से बैकुंठी यात्रा निकाली गई। अंतिम संस्कार शाहपुर मुक्तिधान में किया गया।

साध्वी कल्याणमित्रा जी का देवलोकगमन

बीदासर

साध्वी कल्याणमित्रा जी का बीदासर में २३ मई, २०२२ को प्रातः ११:५५ बजे देवलोकगमन हो गया।

आपका जन्म वि०सं० २०१५ मृगसर कृष्णा ३ को माता इमरती देवी, पिता नेमीचंद के घर एक कन्या का जन्म हुआ। आपका गोत्र सुराणा (ओसवाल) था।

वैराग्य भावना : साध्वी कलाश्री जी (सुजानगढ़) की प्रेरणा से संयम लेने की भावना हुई, फिर आप लगभग साढ़े तीन साल पारमार्थिक शिक्षण संस्था में साधनाभ्यास व शिक्षा प्राप्त की। संस्था में आपका नाम कनककुमारी था। आपने जैन विद्या स्नातक तृतीय वर्ष का अध्ययन किया।

दीक्षा : मुमुक्षु कनककुमारी ने लगभग १६ वर्ष की अविवाहित वय में संवत् २०३४ माघ शुक्ला ५ (१२-२-७८) को आचार्यश्री तुलसी द्वारा सुजानगढ़ में दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा होने के बाद आपका नाम साध्वी कल्याणमित्रा रखा गया।

दीक्षा के बाद आप साध्वी संतोकांजी (लाडनूं), साध्वी आशाजी (राजलदेसर), साध्वी मानकंवर जी (सुजानगढ़) के साथ रही। संवत् २०५६ से साध्वी कलाश्री जी (सुजानगढ़) के साथ रही।

कंठस्थ ज्ञान : दशवैकालिक, जैन तत्त्व प्रवेश, लघुदंडक, भक्तामर, कल्याणमंदिर, सिंदूरप्रकरण, शांतसुधारस, जैन सिद्धांत दीपिका, कर्तव्यषट्त्रिंशिका, चौबीसी, आराधना, आचार बोध, विचारबोध, व्यवहारबोध, तेरापंथ प्रबोध आदि कंठस्थ थे।

साध्वी मोहन कुमारीजी (श्रीडूंगरगढ़) का देवलोकगमन

सिवानी (हरियाणा)।

शासनश्री साध्वी मोहन कुमारीजी का जन्म दिनाजपुर (वर्तमान में बांग्लादेश) में वि०सं० १९६० पौष शुक्ला चतुर्थी (२० दिसंबर, १९३३) को श्रीडूंगरगढ़ (राजस्थान) के मालू परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम मोतीलालजी मालू और माता का नाम मुलतानीदेवी मालू था। उन्होंने तेरह वर्षों की लघुवय में तेरापंथ के नवम अधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी के मुख-कमल से जैन भगवती दीक्षा स्वीकार की। उनकी दीक्षा विक्रम संवत् २००२ माघ शुक्ला पंचम (२७ जनवरी, १९४७) को चुरू में हुई। मालू परिवार से चार बहनें दीक्षित हुई। साध्वी मोहनांजी की दीक्षा उनकी बड़ी बहन साध्वी चांदांजी के साथ हुई। साध्वी प्रेमलताजी (छोटी बहन) और साध्वी किरणप्रभाजी (चचेरी बहन) की दीक्षा उनके बाद में हुई।

दीक्षा के बाद साध्वी मोहन कुमारीजी ने साध्वी हरकंवरजी (फतेहपुर) के सान्निध्य में अपने आध्यात्मिक संस्कारों को पुष्ट किया और शैक्षणिक विकास की दिशा में अग्रसर हुई। वि०सं० २०२८ गंगाशहर मर्यादा महोत्सव के अवसर पर गुरुदेव श्री तुलसी ने अग्रणी के रूप में नियुक्त किया। वि०सं० २०७३ सिलीगुड़ी मर्यादा महोत्सव पर महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने उन्हें शासनश्री अलंकरण से अलंकृत किया।

राज०, म०प्र०, पंजाब, हरियाणा आदि उनके विहार क्षेत्र रहे। वि०सं० २०५३ में श्रीडूंगरगढ़ सेवाकेंद्र में चाकरी के दौरान उन्होंने एक साथ पाँच मुमुक्षु बहनों को प्रेक्षा-प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के पावन चरणों में समर्पित किया।

साध्वी पंचनिष्ठाओं में निष्णात थी। उन्होंने आगमों का गहराई से पारायण करने के बाद युग-सापेक्ष विषयों का भी अध्ययन किया। वे हिंदी, राजस्थानी, संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी भाषाओं का ज्ञान रखती थीं। उनकी साहित्यिक प्रतिभा बेजोड़ थी। हस्तलिपि सुंदर थी। काव्य-कल्पना अद्भुत थी। छंद-रचना में प्रवाह था। उनकी तीन कृतिया—(१) व्यवसाय प्रबंधन के सूत्र और आचार्य भिक्षु की मर्यादाएँ, (२) अंक सम्राट आचार्य तुलसी, (३) अंक विज्ञान और आचार्य महाप्रज्ञ। उनकी नवीकरण की क्षमता के प्रकट करती हैं। उनकी काव्यकृतियाँ—ममता-बंधन, अरहंते सरणं पवज्जामि, ध्रुवयोगी महावीर और प्राणकोश (कविता-संग्रह), उनकी सृजनशीलता की निशानी है।

पिछले बारह वर्षों के क्रमशः आहार-परिहार क्रम को देखकर ऐसा लगता था कि वे गुप्त रूप में संलेखना की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। २३ मई, २०२२ को सिवानी में रात्रि ११:१५ बजे देवलोकगमन हो गया। अंतिम संस्कार २४ मई सिवानी में किया गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**